‡ श्रीसीतारामो जयति ‡

॥ श्रीचारुशीलादेव्यै नमः ॥

* श्रीमते श्रीरामानन्दाय नमः *

काञ्चनकुसुमाञ्जलि

[library stamp: ...पुस्तकालय... साकेत]

ग्रन्थकर्त्री।

श्रीमती रानी, श्रीमहारानी, श्रीसवाई महारानी **कञ्चन-कुँवरि जू देवी** (नन्नी सरकार) विजावराधीश्वरी,

श्रीमान राजा, श्रीमहाराजा, श्रीसवाईमहाराजा

सर सावन्तसिंह साहब बहादुर जू देव

के० सी० आई० ई० विजावरनरेश की

धर्म्म-सम्पन्ना, सुशीला, पातिव्रतरता

राजमहिषी।

सम्पादक और प्रकाशक,

पं० मैथिलीशरण "सौन्दर्य"

माधुरीकुञ्ज, नज़रबाग—श्रीअयोध्याजी।

सं० १९८५ वै०

बाबू गिरिजादयालु श्रीवास्तव्य द्वारा, श्रीसीतारामयन्त्रालय

श्रीअयोध्याजी में मुद्रित।

प्रथमावृति } १००० }

{ मूल्य कृपा

*++*श्रीसीतारामास्यांनमः*++*

भूमिका ।

प्रेम रस रूप है । जिस अन्तः करण के क्षेत्र में उसका सञ्चार होता है उसमें अनेक भाव रूप कुसुम खिलने लगते हैं। भाग्य वश यदि कहीं उसमें भगवत्कृपा रूप बसन्त ऋतु का सुयोग उपस्थित होगया तो फिर उन (भाव रूप) कुसुमों में ऐसा मधुर मनोहर सौरभ भर उठता है कि दिगन्तों को सुवासित कर देता है । कितनेही भक्त भावुक रूप मधुलोभी मलिन्दों को कृतार्थ करता हुआ नित्य नूतन बना रहता है। यह काञ्चन कुसुम उपर्युक्त श्रीमती महारानी के वैसेही प्रसून हैं, उनके भावुक हृदयके सुकोमल उद्गार हैं। अपने परम इष्ट दिव्य दम्पत्ति (श्रीसीतारामजी) के प्रेम में निमग्न होकर समय-समय पर उन्होंने इन कुसुमों का विकास किया है। इन पदों की रचना की है। इनमें योजना अथवा कृत्रिमता नहीं है, किन्तु स्वाभाविकता एवम् सरलता के साथ सरसता है । जैसा उनका शुद्ध मुग्ध हृदय है तैसेही उनके ये पद हैं।

ग्रन्थकर्त्री का संक्षिप्त जीवनवृत्त ।

इस अवसर पर श्रीमती ग्रन्थकर्त्री के जीवन वृत्त का कुछ दिग्दर्शन करा देना भी आवश्यक है। महारानी ऐसी नारी-रत्नके जन्म-दान का गौरव प्रमारवंशोद्भव करहिया रियासत ग्वालियर के श्रीमान् दीवाव गजराज सिंहजू देव को प्राप्त है। श्रीमती का जन्म सम्वत् १९५१ वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया पुष्य नक्षत्र के शुभ लग्न में राजधानी दतियामें हुआ। (दतिया राजवंशसे आपके पित्र कुलकी रिश्तेदारियां अबतक चली आतीहैं, और वहां जागीर भी मिली हुई है) । जिसका जैसा संस्कार होता है बाल्यावस्था में उसका लक्षण प्रकट हो जाता है। तदनुसार महारानी की सुशीलता, सरलता, सौहार्द एवम् भक्ति-भावुकता का परिचय शैशवही में मिलने लगा। माता-पिता, सखियां, दासियां सब उनके शील स्वभाव से वशी भूत रहतीं। माता-पिता तथा अन्य गुरुजन की, उनके लाड़-प्यार करने की अभिलाषा सखी सहेलियों की उनके सङ्ग हिलनें-मिलने और खेलने की इच्छा सदा बनी रहती। इनको वन दृश्य बड़ा प्रिय था। संयोग से इनका पितृप्रदेश (करहिया) पहाड़ी बन्य दृश्यों काही प्रान्त था।

जब तब बालिका काञ्चन कुंवरिजी अपनी सहेलियों को लेकर उस पहाड़ी वनप्रान्त के एक रमणीय एकान्त स्थल पर चली जातीं, जिसे मकरध्वज का पर्वत कहते है। वहां किसी सुन्दर तरु लता-वेष्टित कुञ्जमें झूला डालतीं और यह भावना करतीं कि उसपर प्रिया-

प्रियतम श्रीसीताराम जी भूलते हैं। उनको इस प्रकार भावना पूर्वक झुलातीं और हिंडोल सम्बन्धी गीत गातीं। कभी रङ्ग-बिरङ्ग के बन-कुसुमों को तोड़कर माल्यादि बनातीं और प्रेम पूर्वक (श्रीसीतारामजी) को अर्पण करतीं। इस प्रकार हरित तृण-पत्र-वेलियों से आच्छादित उस बन भूमिमें केलि पूर्वक नाना प्रकार की भगवत्लीला सम्बन्धिनी भक्ति-भरी भावनायें नित्य नूतन किया करतीं।

मातृ भाषा हिन्दी की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके वह श्रीरामायण-भक्तमाल आदि धार्मिक ग्रंथों का अवलोक करने लग गईं, श्रीरामचरितमानस में उनकी अपूर्व निष्ठा थी। उसका नित्य नियम से मासपारायण पाठ करतीं साथही जब तब नवाह्निक अनुष्ठान तथा विविध व्रतोपवास आदि भी करती रहतीं।

पूर्वोक्त सिद्धाश्रम के मकरध्वज शलपर एकबार वे गईं। दैव योग से इन्हे वहां एक सिद्ध सन्त के दर्शन हुए। इन्होंने श्रद्धा पूर्वक उन महात्मा को प्रणाम कर (श्रीसीतारामजी) की भक्ति का वर मांगा। उन्होंने हाथ के सङ्केत से इनको इनका अभीष्ट प्रदान किया (भगवद्भक्ति के साथही "निज अनुरूप सुभगबर मांगा" का भाव भी पूर्ण किया)। और भी कुछ ये कहने को थीं कि वे अदृश्य हो गए। ऐसा प्रसिद्ध है कि उस पर्वतपर बड़े-बड़े कालीन सिद्धसन्त अन्तरिक्षस्थ रहते हैं।

बिवाह।

शुभ सम्वत् १९६९ फाल्गुन कृष्ण में देवी श्रीकाञ्चनकुंवरि जी का, बुन्देल वंशावतंस श्रीमान् सवाई महाराजा सर सावन्त सिंह जू देव के० सी० आई० ई० बिजावर नरेश (बुन्देलखन्ड) से पाणिग्रहण हुआ। पति गृहमें भी उनकी वही भगवन्निष्ठा, वैसी ही आराधना साधना बनी रही, प्रात्युत्पतिभक्ति तथा गरिमा और अवस्था के साथ उत्तरोत्तर बढ़तीही गई, और बढतीही जारही है। आप अपने शुद्ध सौहार्द, मधुर, मनोमुग्धता, क्षमा, दया आदि शुभ शील गुणोंसे एक आदर्श राजकुल लक्ष्मी एवम् महिषी हैं।

बिजावर में प्राचीन व्यवस्था का एक हरिमन्दिर (लखूरे बाग में) था आपने अपने अधिकार में पाकर उसके अनेक अङ्गोंका जीर्णोद्धार कराया, और अभिनव सुसंस्कृत रूपका नाम(श्रीराम-निवास) रक्खा। वह सुसंशोधित सुन्दर मन्दिर सेवा-पूजा, भोग-राग, उत्सव समैया एवम् अतिथि-सत्कार के कारण बहुत शीघ्र प्रसिद्ध हो गया।

श्रीमती नित्य नियमसे वहां दर्शनोंको आतीं, और प्रबन्धका निरीक्षणकरती रहतीहैं।

एक धर्म सभा भी आपने स्थापित की है, जिस में धर्मोपदेश और सत्सङ्ग हरिकीर्तन समय समय पर हुआ करता है। मास में दो अधिवेशन प्रति अमावस्या और पूर्णिमा को नियमित रूप से होते हैं, जिसमें स्थानीय पण्डित, कवि, महाजन और अनेक राज कर्मचारी उत्साह पूर्वक सम्मिलत होते हैं।

महारनी उस सभाकी स्वयम् अध्यक्षिणी हैं। इससे श्रीमती की धार्मिक जागृति का अच्छा परिचय मिलाता है।

ओड़छे का स्वप्न।

उप संहार रूप से हम यहां ओड़छे के एक चमत्कृत स्वप्न का उल्लेख करते हैं जिस से महारानी की आन्तरिक भक्ति का परिचय मिलता है।

वेत्रवती के तटपर रमणीय वन प्रृश्यों से पूर्ण ओड़छा बुन्देलों की प्राचीन राजधानी है। श्री व्यासजी जैसे भक्ति कवि और केशवदास सरीखे भाषा साहित्य के आचार्य्य-कवि को जन्मदान का गौरव उसी भू भाग को प्राप्त है। भक्तमाल प्रसिद्ध महाराज मधुकरशाह की महारानी, गणेशदेईजी को अलौकिक रूप से श्रीअयोध्या में श्रीसरयू जी में प्राप्त हुए अर्चा विग्रह भगवान (श्रीरामराजा) यहां स्थापित हैं। वे जागृत कला श्रीविग्रह हैं। उनकी बड़ी महिमा है। और अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। उस प्रान्त के लोगों की उनमें बड़ी निष्ठा है। इस प्रकार भगवान् (श्रीरामराजा) के कारण ओड़छा एक तीर्थ सा हो गया है।

जब से भगवान् श्रीरामराजा जीने महारानी, श्रीगणेश देईजी को अपनाया और औड़छे को कृतार्थ किया, तब से औड़छा राजकुल में कितनी ही महारानियां श्रीरामोपासिका हुई, और होती जारही हैं। वर्तमान समय में पूर्वोक्त महारानी श्रीगणेशदेई, जीका पवित्र स्मरण दिलाने वाली बुन्देल-खण्ड नृपमौलि मणि श्रीसवाई महेन्द्र महाराजा धिराज श्रीप्रताप सिंहजू देव, की ज्येष्ठा राजमहिषी परम यशस्विनी तपस्विनी श्रीसाकेत वासिनी श्रीवृषभान कुंवरिजू देवी अपनी भावना भक्ति के लिये विशेष प्रसिद्ध हुई हैं। आपकी दो पुण्य कीर्तियां एक श्रीअयोध्याजी का नवनिर्मित श्रीमन्दिर (श्रीकनक-भवन) और दूसरी श्री मिथिला जी का (श्रीजानकी मन्दिर) उनके शुभ नामको चिरकाल तक स्मरणीय बनाए रहेंगी हमारी चरित्र नायिका उन्हींकी प्रिय पुत्र बधू हैं। आपभी उसी पुण्य मार्ग की पथिक हैं।

एकवार श्रीमती महारानी, काञ्चनकुंअरि जी (श्रीजनक लड़ैती देवी) अपने ससुराल टीकम गढ़ गई। उनकी अभिलाषा वहां से औड़छे जानेकी और श्रीरामराजा, के दर्शनों की हुई। उनकी ऐसी इच्छा जानकर (श्रीमान् सवाई महेन्द्र महाराज) उनके पूज्य श्वशुरजी ने समुचित प्रबन्ध कर दिया, और वे टीकम गढ़ बुन्देल राज सिंहासन की प्राचीन पीठ औड़छे गई। वहां भगवद्विग्रह के दर्शन कर वे कृत-कृत्य होगई। उनके मनमें भगवान् के लिए सुन्दर पोशाक बनवाने की इच्छा हुई और वे इस विचार में पड़ीं कि वो वस्त्र कैसे हों—किस रङ्ग के 'श्रीजी' के लिए और किस रङ्ग के 'भगवान् के लिए। इसी चिन्ता में वे अपने राज-महल (फूलबाग) में आकर निद्रा मग्न हो गई। स्वप्न जगत में भगवान्ने उनको अलौकिक छटा से दर्शन दिए और वस्त्र सम्बन्धनी उनकी चिन्ता दूरकी। महारानी काञ्चनकुंअरि (श्रीजनकलड़ैतीजू) ने देखाकि भगवान् पीत वस्त्र और श्रीकिशोरजी, नीलाम्बर धारण किए हैं। उस रहस्यात्मक स्वप्नका वर्णन यहां संक्षिप्त रूपसे उन्हीं (महारानी) के शब्दोंमें दिया जाता है, आगेभी कुसुमाञ्जलिके कतिपय पदोंमें तज्जन्य उनकी दशाका चित्रण हुआ है।

स्वप्न वर्णन ।

दोहा ।

मन उपजी यह लालसा, सखि अनुपमछबि ताक ।
बनवाऊँ निज ओर सें; प्रभुहित कछु पोशाक ॥ १ ॥
पुनि बिचार लागी करन, कौन भांति की होंय ॥
कौन रूपकी चाहिए, कौन रङ्ग की सोय ॥ २ ॥
उत कछु निश्चय ना भयौ, पुनि आई निज भौन ॥
सकल सखिन के बीच में, बैठि रही गहि मौन ॥ ३ ॥
सखि सब कारण पूछतीं, कहौं कहा किहिं ओर ॥
को मन जानत आपनौ, को जानत चित चोर ॥ ४ ॥

चौपाई ।

यहि बिधि करत बिचार सुरीती । एक याम यामिनि तहँ बीती ॥
सखियन नैन नींद कछु देखी । शयन हेतु किय विनय विशेषी ॥

सार छन्द ।

ग्रीषमनिशि खिलरही चांदनी, चहुंदिशि चमक सुहाई ।
शीतल-मन्द-सुगन्ध सुखद अति, पवन चलत मन भाई ॥
फूल बाग महलन छाजे पर, शोभा परम सुहाई ।
सुन्दर सरस सलौनो सखियन, तँह शुचि सेज लगाई ॥
तापर पौढ़ करत कछु बतियन, नयनन नींद समाई ।
उर धर मधुर मूर्ति सिय पियकी, सोय रही सुखपाई ॥
सोवत स्वप्न अचानक ऐसौ, अद्भुत तेज दिखानौ ।
कोटि सूर्य इकवार आन कर, उदय कियौ है मानौ ॥
भई सु चकित चितै चकचौंधी, तेज अधिक जिय जानी ॥
तौलग ताबिच मञ्जु मुकुट की, किञ्चित झलक दिखानी ॥
विह्वल भई देह सुधि भूली, पूरण रूप दिखानौं ।
नील पीत जल जात सु अञ्जन, उपमा कौन बखानौ ॥
इत्यादि,

उपर्युक्त महारानी के सात्त्विक पदों में उस स्वप्नचमत्कृत का पूर्ण प्रभाव और उनके हृदय का मधुर भावभरा हुआ है ।
शुभम्,

माधुरीकुञ्ज, नज़रबाग-श्रीअयोध्याजी
पौ० शु० ५ सं० १९८५ वै० ।

पं० श्री मैथिलीशरण ।

श्री सीतारामोजयति।

अथ काञ्चन कुसुमाञ्जलि।

मंगलाचरण बन्दना।

चौपाई।

प्रणव सरस्वति श्रीगणराऊ। जासु प्रभाव विदित सब काऊ॥१॥
बाणी बुद्धि विशारद दोऊ। सदय हृदय मंजुल मृदु सोऊ॥२॥
देहु सुमति सिय पिय गुण गाऊँ। कञ्चन कुँअरि यही बर पाऊँ॥३॥
नित नूतन उर सर सरसाई। चरित सुधा भर भर अधिकाई॥४॥

श्रीगणेशजी की बन्दना।

पद।

प्रणव गणपति के चरण हमेशा॥
जिनकी कृपा विघ्न सब नासें छूटत कठिन कलेशा। मङ्गल करन

भरन सब सुखके रहत न दुख लवलेशा ॥ विद्या-बुद्धि देत निशि-बासर सुमिरत सिद्धि सुरेशा। कञ्चन कुँअरि कृपा कर दीजे सिय पिय प्रेम परेशा ॥ ५ ॥

श्रीसरस्वतीजी की बन्दना।

पद।

बुद्धिवर दीजे शारद माई ॥
हौं अति मंद हीन मति मेरी चरण शरण तक धाई। बिनवौं दुहुंकर जोर सरस शुचि हृदय करो मम आई ॥ सिय पिय गुण तव आस धार चित वरणत हौं सुख दाई। कञ्चन कुंअरि लाज रख लीजे कुसुमांजली बनाई ॥ ६ ॥

श्रीगुरु बन्दना।

दोहा।

श्रीगुरु पद्म पराग में। मन मधुकर ह्वै लीन॥
कञ्चन कुसुमाञ्जलि करत। सिय पिय पदरतिपीन॥ ७॥

श्रीहनुमानजी की बन्दना।

चौपाई।

अञ्जनि नन्दन पद सिर नाऊँ। करहु कृपा प्रभु गुण गण गाऊँ॥
कञ्चन कुसुम बनैं अति नीके। होंय हार हिय के सिय पीके ॥८॥

प्रार्थना श्रीकिशोरीजी से।

गजल।

टुक मिहिर नज़र कीजे मिथिलेश की दुलारी।

धर ध्यान मान लीजै स्वामिनि विनय हमारी ॥
दृग कृपा कोर मम दिशि इक बार हेर लीजे ।
कीजे सुफल मनोरथ दासी हूं मैं तुम्हारी ॥
बनजाय कोइ तरह से कञ्चन महल अवध में ।
सरजू के तीर सुन्दर इहि लालसा है भारी ॥
अभिराम पर्म पावन विश्राम आपका हो ।
सेऊं चरण कमल में वसु जाम प्रान प्यारी ॥
जोड़ी जुगल मनोहर भर भर के नैन देखूं ।
सौभाग अपना लेखूं तन प्रान जिवन वारी ॥
कञ्चन कुँअरि पै जो गर होजाय मिहरबानी ।
छुटिजाय एक छिन में भव आस त्रास सारी ॥ ९॥

प्रार्थना श्रीरामजी से ।

गज़ल ।

श्रीरामचन्द्र स्वामी सुनिऐ बिनय हमारी । कीजे नजर मेहर की लीन्ही शरण तुम्हारी ॥ सब रोग शोक छूटै दुनियां का मोह टूटै । लागै लगन तुम्ही से यह कामना हमारी ॥ सुखधाम श्रीअवध में मोहि बास नाथ दीजे । श्रीबनप्रमोद कुञ्जन लीला लखौं तिहारी ॥ सिर क्रीट मुकुट सुन्दर कानों में मकर कुण्डल । नासा बुलाक नैनन कजरे की रेख न्यारी ॥ मुख पान की बिरी है मुसक्यान

माधुरी है। द्रगसैन बांकुरी है भृकुटी कठिन कटारी ॥ तन परम शुभग श्यामा छबि देत पीत जामा। लखि लजत कोटि कामा कर कञ्ज चापधारी॥ घुंघरारि प्यारि अलकें मुखचन्द्र पै सुहाहीं। अहिनी सि कारी कारी तन प्रान हरन हारी॥ चञ्चल नवल रंगीलीं मिथिला नगर की बाला। दाहिन सकल विराजैं बांएं जनक दुलारी ॥ निशि दिन मगन रहूं मैं इहि ध्यान प्रान प्यारे। विनवै जनक लड़ैती करजोर कर विहारी ॥ १० ॥

इति मंगलाचरण प्रार्थना वंदना।

अथ श्रीरामजी के जन्मोत्सव की बधाई।

बधाई :

नृपतिं अवधेश गृह बाजे बधाए। ललन को जन्म सुन जाचक जो आये ॥ श्रीमणि महंराजनैं भूषण लुटाये। विप्रजन मागनै सनमान पाये ॥ लह दान निज निज मनके भाये। सिद्धि नवनिद्धि भूपति भवन छाये ॥ नगर नर नारि सब मंगल मनाये। कुँअर चारिहु सुभग सुन्दर सोहाये। निरखि कञ्चन कुँअरि आनन्द बढ़ाये ॥ ११ ॥

पद बधाई।

नृपति गृह शोभा बरणि न जाई ॥
जग निवास प्रभु प्रगट भये हैं आनन्द मङ्गल छाई। वन्दनवार पताका सोहैं कञ्चन कलश धराई ॥ सिंघपौरि पर नौवत बाजै युवतिन मङ्गल गाई ॥ विप्रन दान दियौ मन भायौ भूषन बसन लुटाई। कञ्चन कुँअरि निछावरि पाई मैं अपनी मन भाई ॥१२॥

पद बधाई ।

आज नृप द्वारे बजत बधाई ॥
भक्तन हित प्रभु जन्म लियो है देव सुमन झरलाई । पुर परि-जन सुनि धाये जहँ तहँ आनँद उर न समाई ॥ दस स्यंदन जू सिंघ पौरि पर हीरा लाल लुटाई । कञ्चन कुँअरि कौशला सुतपै बार बार बलि जाई॥१३॥

पद बधाई ।

अवधपुर घर घर बजत बधाई ॥
भूप द्वार सखि गवत सोहिलौ भये प्रगट सुखदाई । गज गामिनि नव सप्त सवाँरे हिलि मिलि चलीं सोहाई । दधि दुर्वा अक्षत रोरी लै कञ्चन थार सजाई ॥ आतुर आय राज महलन में हीरन हार लुटाई । राम मातु मन हरष सबनको सनमानी सुख पाई ॥ बहु मेवा पकवान मिठाई दीनौ गोद भराई । कञ्चन कुँअरि सबन पहिराये पट भूषन रुचिराई॥१४॥

पद बधाई ।

आज रावल में वेग चलौ री॥
दसस्यंदनजूके चार सुवन भये पूरब सुकृत फलौ री। बहुत दिनन की आस पुजानी जाग्यौ भाग भलौ री ॥ कंचनकुँअरि संतजान प्रमुदित दुष्टन मान मलौ री॥१५॥

इति श्रीरामजी के जन्मोत्सव बधाई पद सम्पूर्ण ।

अथ श्रीरामजी के बाललीला के पद।

दादरा।

हर्षित मैया निरखि मुख ललना ॥
कबहुं खिलावत गीत सुनावत कबहुं झुलावत पलना । हुलसत किलकत रघुबर बिहिसत चलत घुटुरुअन थलना ॥ कबहूं धाय धरत कर जननी कबहुं सिखावत चलना । कञ्चन कुँअरि दरस बिन इनके मो जिय छिन पल कल ना ॥ १६ ॥

ठुमरी ।।

आज लालनको नजर लगीरी, ना जानौ कौन घरी री ॥
प्रातहि से मचले नहिं मानत, ऐसी धरन धरी री ॥
आयो एक दिगम्बर मो गृह, वाको दृष्ट परी री ॥
जंत्र मंत्र तंत्रादि न लागत, मैं बहु युक्त करीं री ॥
फिर आयो तिहि छिन वह जोगिया, लालन दीठ झरी री ॥
कञ्चनकुँअरि कुँअर लखि मोदित मैया मोद भरी री ॥१७॥

पद गौरी।

सखन संग खेलत चारौ भइया ।
मणिमय जटित सुभग शुचि आंगन, तैसइ रैन जुन्हैया ॥ गेंद खेल खेलत तहँ लालन, संतन के सुखदैया । दौरत हँसत गिरैं नहिं आली, अति डरपत मन मैया ॥ आपहि पुनि पीछे उठ धावत, जिमि बछुरा संग गइया। कञ्चन कुँअरि चूम मुख फिर फिर लेतीं ललन बलैया ॥ १८ ॥

पद गौरी।

बिहरत राजमहल रघुराई।
शीस मुकट कटि कसत पीत पट, श्याम बदन छबि छाई॥ भाल तिलक कुण्डल कल कानन, अलक झलक मन भाई। दृग खञ्जन अञ्जन युत सोहत, चितवन चितहि चुराई॥ अनुज सखन युत विलसत हुलसत, लख जननी बलिजाई। कञ्चन कुँअरि लाडले नृपके, मो दृग रहे समाई॥ १९ ॥

पद खम्माच।

सखन संग बिहरत राजदुलारे॥
शुभग शृँगार श्याम तन शोभित धनुष बान कर धारे। भृकुटी वंक बिलोकनि तिर्छी दृग खञ्जन कजरारे॥ बोलत मधुर मधुर मन भावन चोरत चित्त हमारे। सरजू पुलिन प्रमोद विपिन में कंचन कुँअरि निहारे॥ २० ॥

इति श्रीरामजी की बाललीला सम्पूर्ण।

अथ श्रीजानकीजी के जन्म की बधाई पद।

बधाई।

जनक नृप द्वारे बजत बधाई। भई सबके मन भाई॥
रानी सुनैना सुता जनी हैं, मैं अबहीं सुन आई। हिलि मिलि चलीं नवेलीं बनिता, सज नवसप्त सुहाई॥ पहुंचीं जाय राज मन्दिर में आनँद उर न समाई। नाचहि गावहि भाव बतावहि ताल मृदंग

बजाई ॥ चढ़ बिमान सुर हनहिं दुंदुभी गगन सुमन झरलाई। परमानन्द मगन मन राजा सम्पति सकल लुटाई ॥ जाचक जाति अजाचक कीन्हीं लह अशीस हरषाई। कञ्चन कुँअरि निरख सिय मुख छवि बार बार बलिजाई ॥ २१ ॥

बधाई।

बधाई बाजै जनक नगर में ॥

परम प्रमोद सरस सब सरिता, उमँग चलीं सागर में। हरषित तरुनबाल सब बनिता पहुंची डोलत डगर बगर में ॥ सुनि सिय जन्म अनंद सिन्धु सखि उमँग समात न उर में। निज पर नहिं पहिचान रही कछु भई भीर राउर में ॥ दिये दान गज बाज घनै नृप मणि गण निवछाउर में। कञ्चन कुंअरि अयाचक याचक लख कुबेर जिय भरमें ॥ २२ ॥

गज़ल।

बाजैं बधाई राजमहल आज घनी री ॥

सुन्दर सुता सलौनी सुख खान जानकी। धन धन्य हैं सुनैना जिन कूँख जनीरी ॥ छाये गगन बिमान सुमन सुरगण वर्षैं। कल मंद मंद दुन्दभीन होत ध्वनी री ॥ आवत अनेक जाचाक पावत हैं सम्पदा। खोले भंडार भारी निमिराजामनी री ॥ सुनिकर सबै चालीं हैं सज सज के भामिनी। पहुंची हैं राजमन्दिर मनमोद सनी री

कञ्चन कुंअरि सियामुख छवि चन्द्र देखके, तनमन को वार देत फेर प्रान धनीरी ॥ २३ ॥

इति श्रीजानकी जन्म उत्सव बधाई सम्पूर्ण ।

अथ श्रीजानकीजी के बालबिनोद के पद ।

ठुमरी पीलू ।

पलना झूलैं लली निमिराजकी ।
हों जो गई सखि राजमहल में बलिहारी घरी आजकी ॥ अवलोकति गति मति सब थाकी क्या कहुं सुखमा साजकी । शशिमुख पर अलकैं अलि छलकैं जनु छौनी अहिराजकी ॥ मंद हँसति मुख लसति दतुलिया जनु दुति जलज समाजकी । कञ्चनकुँअरि निहारत भूली सुधि बुधि सब गृह काजकी ॥ २४ ॥

पद जंगला ।

सिय दिसि देख जननि हरषावै ।
बार बार कर जोर निहोरें बहु विधि देव मनावैं ॥ पूजेंगे कब मोर मनोरथ मन अभिलाष बढावैं । कब ह्वै हैं मम सुता सयानी कब निज पाइन धावैं ॥ कब मम करसे असन छीन कछु निजकर कमलन पावैं । कञ्चन कुँअरि तोतरे बोलन कहि मोहि मातु बुलावैं ॥२५॥

इति श्रीजानकीजी के बालबिनोद के पद सम्पूर्ण

अथ श्रीअवध में विश्वामित्रजी के आने और श्रीरामजी व श्रीलक्ष्मणजी को यज्ञ रक्षा करते हुऐ श्रीमिथिलाजी में पहुचने तक के पद प्रसंग,

श्रीअवध में बिश्वामित्रजी का आना।

पद।

गाधिसुत असुरन से दुख पाई।
आय अवध नृपजू से जांचे राम लषण दोऊ भाई॥ सुनि दसस्यंदन मुनिवर बाणी अति अधीर अकुलाई। सावधान ह्वै कुल गुरु हेरे तिन सब कथा बुझाई॥ तब धरि धीर आर्यवर सादर पठै दिये रघुराई। कञ्चन कुँअरि चले ऋषि सँग हिय हर्ष सन्त सुखदाई।२६॥

श्रीराम लक्ष्मणजी का जाना और ताड़का इत्यादि बध करना।

पद।

हनी मग चलत ताड़का राम।
मुनि मख रची सिद्ध आश्रम में धाए असुर तिहि ठाम॥ गह सर दुष्टदले रघुनन्दन भक्तन हित निष्काम। आशीर्वाद दियो विप्रन ने विजय विभूति ललाम॥ कञ्चन कुँअरि शस्त्र विद्या सब गाधि सुवन दीनी सुखधाम॥ २७॥

श्रीमिथिलाजी में श्रीरामजी का पहुंचना।

पद।

विश्वामित्र संग दोउ भाई॥
मिथिलापुर कँह चले हरष हिय जहां धनुष मख रची सुहाई।

मारग में मुनि पत्नी तारी उपल देह तज तिय गति पाई ॥ सुरसरि बूज नहाय पार भए त्रिभुवन के भावन सुखदाई। कञ्चन कुँअरि जनकपुर पहुंचे लखी मुनीश रुचिर अमराई ॥ २८ ॥

दोहा।

मिथिलापुर शोभा निरखि। सुखी भए सुखकन्द ॥
देख मनोहर ठाम इक। रहे गाधि-कुल-चंद॥ २९ ॥

इति श्रीमिथिलाजी में पहुंचने तक के पद प्रसंग सम्पूर्ण

अथ श्रीरामजी का मिथिलाजी में आगमन और वहां के नर नारियों का परस्पर प्रेम विनोद, नगर अवलोकन, फुलवारी, धनुष-खण्डन, व्याह बनरा और भोजन के समय की गारी कलेऊ और बिदाई के पद।

श्रीमिथिलापुर बासियों के परस्पर बचन और नगर अवलोकन के पद प्रसंग।

सोरठ।

जनक नगर में महामुनि आये ॥
वैश किशोर सहज मनभावन राज कुँअरि दोउ ल्याये। गुन आगर नागर वर देखन सकल नारि नर धाये ॥ समाचार सुन नृप तँह गवने लख लोचन फल पाये। कञ्चन कुँअरि समुझ प्रण आपन उर अन्तर पछिताये॥ ३० ॥

सोरठ।

कुँअरि दोउ आये सब सुख पाये ॥
जनक नगर में कहर मचो है आनँद उर न समाये । पुरवीथिन-

वीथिन में विहरत निरख नवल शोभा मन भाये ॥ नर नारी सँग ही सँग डोलत गृह कारज बिसराये । कञ्चन कुँअरि सलोनी सूरत सिय वर जोग सुहाये ॥ ३१ ॥

पद ।

सखीरी दोउ आये राजकिशोर ॥
श्यामल गौर सहज मनभावन लाजत काम करोर । क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल जुल्फें ज़ालिमजोर ॥ सुन्दर सुखद सलोनी मूरति चितवनि में चित चोर । छहरत छबि विहरत सुन सजनी मिथिलापुर की खोर ॥ जनक नगर मोहनिया डारी कहर मचो चहुं ओर । बिबसभये नर नारि विलोकतफँसे प्रेमकी डोर ॥ कञ्चन कुँअरि बिहसि रघुनंदन हर लीनो मनमोर ॥ ३२ ॥

चौपाई ।

सखि मो नैन लुभाय रहेरी । लखि छबि जीवन लाहु लहेरी ॥ ३३ ॥

दादरा ।

नगर अवलोकन आये आली ॥
ये दोउ कुँअर संग मुनिवर के, धनुषमख देखन आये काली ॥
कीनें सुबस सकल नर नारी, रूप-रस पेखन मोहनी डाली ॥
रतिपति कोटि लजत इन देखे, नवला नष भुई लिखत विहाली ॥
कञ्चन कुँअरि कतल कर दीनी, दृग तिरछी तक मार दुनाली ॥ ३४ ॥

चौपाई।

चितवनि मेंचित लेत हमारो। सखि दोउ राजकुमार निहारो॥ ३५॥

पद।

जनक नगर में कहर मचेरी॥

राजकुँवर दोउ सुभग सलोने जिनहिं देख नर नार ठगेरी॥ डोलत फिरत नगर वीथिन में आज अली मम दृष्टि परेरो॥ श्यामल गौर मनोहर जोरी निरखि रूप दृग लाहु लहेरो। कञ्चनकुँअरि श्याम वर सुन्दर योग्य जानकी जान परेरो॥ ३६॥

भजन।

सखि निमिराज कठिन प्रण कीनों॥

जो कोउ तोरै शंभु धनुषको सियकर दान ताहिकर दीनों। रावण बाण महा भटमानी हारे सकल नहीं जय लीनों॥ सो धनु राज-कुँअर किमि तोरें यह संदेह भयो मन हीनों। कञ्चन कुँअरि भई सब व्याकुल सखि विधि वाम परत नहिं चीनों॥ ३७॥

भजन।

बोली ~~अपर~~ सखी हरषाके॥

क्यों उदास हिय होत अलीरी सिय संयोग हाथ करताके। जेहि विधि विरचि जन्म सिय दीनों तेहि श्यामलवर पठैव बनाके॥ हम धनधन्य दरस जिन पाये हैं बड़भाग विदेह सुताके। कञ्चन कुँअरि धनुष यहि तोरें देखत मृदुल अतुलबल जाके॥ ३८॥

दादरा।

लखे कोइ श्यामल गौर किशोर॥
अलकें झलकें छलकें कपोलन द्रग कजरे की कोर। मृदु मुसक्यान माधुरी प्यारी अवलोकनि चित चोर॥ लोक लाज मरजाद कान कुल निकस गई तृन तोर। कञ्चन कुँअरि विकलकर प्यारे चले गये यहि खोर॥ ३९॥

इति श्रीपुरबासियों के बचन और नगर अवलोकन समय के पद सम्पूर्ण।

अथ श्री फूलबाटिका के पद।

पद।

चले गुरु आयुस लै रघुराई॥
पहुंचे जाय जनक फुलवारी त्रिभुवन के सुखदाई। चहुंदिश हेर मनोहर शोभा बिहरत हिय हरषाई॥ बाग तड़ाग महा छबि छहरैं मनसिज मनहि चुराई। बेल बिटप फल फूल मंजुदल लख ऋतुराज लजाई॥ कोकिल मोर चकोर कीर पिक बोलत श्रवन सुहाई। निरमल जल सरवरतट सुन्दर शैल सुता पधराई॥ परम रम्य आराम विलोकत हिय हरषे दोउ भाई। कञ्चन कुँअरि सुमन हित मालिन पूछत निकट बुलाई॥ ४०॥

पद।

विहरत राजकुँअरि फुलवारी॥
तोरत फूल नवीन बीनकर मंजु ललित कलियन कर न्यारी। पठई

मातु सखिन जुत तेहि छिन गिरिजा पूजन हेत दुलारी ॥ कर अस्नान सखिन सँग शोभित पारवती पँह मुदित सिधारी । धूप दीप नैवेद वेद विधि आरति सजकर कमल उतारी ॥ निज अनुरूप शुभग बर मांग्यो पद अम्बुज गह मङ्गलकारी। कञ्चन कुँअरि करी अस्तुति पुनि जय जय जय गिरिराज कुमारी ॥ ४१ ॥

दादरा ।

सखिन संग बिहरति जनक दुलारी ॥

भूषन सकल सुदेश सुहाये अंग अंग छवि भारी। मंद मंद मुस्क्यान माधुरी रूप छटा उजियारी ॥ नूपुर बजत मैन मनमोहन मंद चाल मतुआरी। कञ्चन कुँअरि लखी छबि बाँकी सरबस दीनों वारी ४२

भजन ।

सखी इक तज सियसंग सयानी ।

गंई विलोकन फूल बाटिका सुखद समय अनुमानी ॥ औचक दृष्टि परे तँह ताके राजकुँअर सुखदानी । श्याम गोर मनहरन छबीले लख तन सुरत भुलानी ॥ बिरह बिबस आई सीता पँह कह न सकत मुँख बानी । चतुर सखी चित चरच सियाको पूंछत तिहि गह पानी ह्वै सन्मुख तब रुचिर कथा सब प्रफुलित प्रगट बखानी । कञ्चन कुँअरि विलोकन के हित जनकलली अकुलानी ॥ ४३ ॥

पद ।

चलीं कर अग्र सखी प्रिय सोई।

गजगति चलन बजन पग पाहिल कटि किंकिनि धुन होई ॥ श्रवन

झनक सुन कहत लखन सन तात लखो यह सोई। कञ्चन कुँअरि धनुष मख मानो इनहीं के हित होई ॥ ४४ ॥

पद।

भये दृग सिय छबि निरखि चकोर।
शरद चन्द्र सम लख मुँख शोभा मोहे राजकिशोर ॥ बरबस परम प्रेम पिंजरा बिच फँसे जाइ चितचोर। कञ्चन कुँअरि परस्पर निरखत बाढी प्रीति न थोर ॥ ४५ ॥

गज़ल।

लागीं सिया बिलोकन अवधेश के दुलारे ॥ पाये बड़े जतन से प्रानो के प्रानप्यारे ॥ दृग सैन अनी तीखी मारी घुमाइ के ॥ फांसे हैं प्रेम फंदे शोभा के जाल डारे ॥लागी०॥ फिर भी हिये में शंका जावें न छूटके। छलिया छटे छबीले रघुबंश के दुलारे ॥ लोचन की राह छबि निधि हिय में पधारके। कीन्हे हैं बंद प्यारी पलकोंके दै किवारे ॥ कञ्चन कुँअरि लखी जब व्याकुल सिया को आली। मतलबभरे रसीले सुन्दर बचन उचारे ॥ ४६ ॥

पद।

लतन बिच निरखौ सिय सुकुमारी।
बहुर गौरि कौ ध्यान करहु किन छबिनिधि लेहु निहारी ॥ भयहु बिलंब चलहु महलनि पुनि आवहु काल्ह दुलारी। कञ्चन कुँअरि सुनत दृग खोले सकुच सहित सिय प्यारी ॥ ४७ ॥

पद ।

किते गये श्यामल राजकुमार ।

चितवत चकित चहूं दिशि सीता पलक निमेष बिसार ॥ तनमन बिबस कियो किन मेरो मंत्र मोहनी डार। कञ्चन कुँअरि कुँअर वर बांके मुनि मख के रखवार ॥ ४८ ॥

भजन ।

लखो सखि ये दशरथ नृप छौना ।

श्यामल गौर सहज मनभावन तीनहु लोक निरौना ॥ चितवतही चित बसकर राखत जानत हैं कछु टोना । सिय सखि योग्य श्याम सुन्दरवर हेरहु परम सलोना ॥ बीनत फूल बिहस चित चोरत लिये वाबकर दोना । कञ्चन कुँअरि सांचकर जानहुं यहीं सियाबर होना ॥ ४९ ॥

पद ।

सखी दोउ बिहरत राजकुमार ॥

क्रीट मुकट मकराकृत कुण्डल पीत बसन तनधार । रूप अनूप अजब छबि देखी इकटक रहीं निहार ॥ अधरन में मुसक्यान माधुरी चितवनि में बलिहार । कञ्चन कुँअरि फिरत फुलवारी जीवन प्रान अधार ॥ ५० ॥

दादरा ।

देखन बाग कुँअर दोउ आये । कोटि मदन छबि छाये ॥

नाचत मोर चकोर पपीहा कोयल शब्द सुनाये ॥ मध्यबाग सर निरमल जलजुत कंज कलिन बिकसाये ॥ कञ्चन कंुअरि लाल दशरथके मोहिय दृगन समाये ॥ ५१ ॥

भजन ।

लखावत कर गह सिय को आली ॥
राजाकुमार लतन बिच हेरहु सुन्दर छटा निराली । चन्द्रबदन पर दुंहुं दिशि छलकें जुलफैं काली काली ॥ श्यामल तन पीताम्बर सोहै मंद चाल मतुआली । कञ्चन कुंअरि बिहसि तक घालत तिरछी तकन दुनाली ॥ ५२ ॥

पद ।

बसे हिय सिय के राजकिशोर ॥
चली भवन पग परत नहीं चित छीन लियो चितचोर । निरखन के मिस द्रुमबेलीसुक फिरत बहोर बहोर ॥ लखी लालकी मनमोहनि छबि हिय अनुराग न थोर। कंचन कुँअरि जाय गिरिजा ढिग विनवत पुनि कर जोर ॥ ५३ ॥

रेखता ।

कर जोर खड़ी गिरिजा ढिग राजदुलारी । जगदंब अंब हिय की तुम जाननहारी ॥ कीनों न प्रगट तेहि से कारण बखान के। करदेहु सुफल सेवा अब मातु हमारी ॥ कह सक न शेष शारद महिमा अपार है । बड़ अग्र पतिव्रत में जग लीक तुंमारी ॥ कंचन

कुँअरि सप्रेम विनय माल कण्ठ से। दीनी अशीस सिय को हँस शैलकुमारी ॥ ५४ ॥

भजन।

सुन सिय विनय गौरि मुसक्यानी ॥
दीन अशीश प्रसाद माल पुनि बोली गूढ़ मनोहर बानी। राजकुमारि सत्य कर मानहु नारद बचन प्रतीति सयानी॥ सुन्दरश्याम जिनहिं मनराचो मिलहिं तुमहि वर सारँगपानी। कञ्चन कुँअरि प्रफुल्लित सिय जिय उमा अशीश पाय हरषानी॥ ५५ ॥

गजल।

गौरि से मन भावती आशिष लई हरषीं लली॥ सखिन जुत गह पांय पुनि पुनि जोर कर सिर नाइ के। पूरि परमानन्द होकर मुदित मन मंदिर चली॥ प्रभु लखी जब जात सीता रूप सुखमा आगरी। चले गुरु पँह दिल सिया पँह है न कल जिय बेकली॥ पा सुमन पूजा करी मुनि वर दियो रघुबीर को। हो सुफल तुम्हरे मनोरथ भाग्य बड़ मिथिला थली॥५६॥

इति श्रीफूलबाटिका के पद प्रसंग सम्पूर्णम्।

—:*:*:—

अथ धनुषखण्डन और जयमाल धारण करावने के समय के पद भजन।

पद।

जनकजी सत्य प्रतिज्ञा कारी॥

मिथिलापुर में रच्यो स्वयम्वर भयो शोर जग भारी। देश देश के जुरे महीपति अमित तेज बलधारी॥ राज समाज कुँअर दोउ आये लखि मोहे नर नारी। जो कोई भूपति धनुषहि तोड़ै व्याहौं ताहि दुलारी॥ राउ सहसदस चाप चढ़ावैं तिल भर टरै न टारी। बैठे देखि महीपति हारे भये मिथिलेश दुखारी॥ रानी सुनैना व्याकुल सिय लखि उठे राम धनुधारी। गुरु को करि प्रणाम मन ही मन दृष्टि चाप पै डारी॥ कञ्चन कुँअरि निमिष मँह टोरयो जय ध्वनि सुरन उचारी॥ ५७॥

चौपाई।

टूटो चाप सकल जग जाना। नभ बाजे गहगहे निशाना॥ ५८॥

पद।

सखिन बिच सोहैं राजदुलारी॥

कर कमलन जयमाल लिये हैं मनु शोभा सिंगारी। जाय समीप निहारि दुलारे बिजय माल गर डारी॥ बाजैं नभ दुंदुभी मधुर सुर गावैं किन्नर नारी। कञ्चन कुँअरि मनोहर जोरी चित्त से टरत न टारी॥ ५९॥

—:*:*:*:*:*:—

अथ विवाह समय के बनरा गारी इत्यादि।

देखौ सखी छबि राम बना की।

माथे मौर खौर केशर की कजरारी अँखिअन सुखमा की॥ व्याह विभूषन राजत अंगन शोभा हरन मैन मद बाँकी। कञ्चन

कुँअरि कहाँ लग बरणों ताकी अजब झरोकन झांकी ॥ ६० ॥

बनरा ।

भावैरी बना राज सलौना ॥
श्यामरी सूरति माधुरी मूरति चितवनि में सखि डारत टोना । ब्याह विभूषण सोहत सुन्दर देख रूप छबि बरण सकौंना ॥ जनकनगर में कहर मचो है भूले पलक ललक सुखसौना । कञ्चन कुँअरि बना दशरथकौ मो जीवनधन जगत निरौना ॥ ६१ ॥

बनरा ।

अजब छबि छायौरी सिया प्यारी को बनरा ।
माथे मौर खौर चन्दन की नैन रतनारे गजब कजारा ॥ सिया० ॥ श्यामगात केशरिया बागौ गर शोभित मोतिन गजारा ॥ सिया० ॥ कञ्चन कुँअरि कञ्जसे प्रफुलित निरखि रूप भूल्यो मन भँवरा सिया प्यारी० ॥ ६२ ॥

बनरा ।

सियाकौ बना प्यारौ अवधेश को दुलारौ । मैं देख आई नैनन में गवोरी समोय ॥ सियाकौ० ॥ सिर मौर हेम हीरन कुण्डल श्रवण के तीरन । प्यारी सेहरे की लुरकन कपोलन सुहाय ॥ सियाकौ० ॥ अखियन अमोल कजारा । गल गुलूबंद गजारा । केशर की खौर जिया लेवे चुराय ॥ सियाकौ० ॥ जरकसी पीत जामा

तन मृदुल शुभग श्यामा। कर कंकन लाली मिंहदी रचाय ॥ सिया०॥ प्रिय जावक पद कमलन। मन ठगत ठवनि अवलन। बांकी तिरछी निगाहों को मारै घुमाय॥ सियाकौ० ॥ कञ्चन कुँअरि छबीलौ। गुण रूप सु गरबीलौ। मोहि मोह लियौ मधुर मधुर बतियां सुनाय ॥ सियाकौ० ॥ ६३ ॥

गज़ल बनरेकी।

जबसे देखी रामकी बांकी अदा मनमोहनी। होगई बेचैन लख बांकी अदा मनमोहनी॥ हौं गई जो राजमन्दिर आज सजनी शामके। देखने को लाड़ले की वो अदा मनमोहनी ॥ जातेही सिरपर ठगोरी पड़गई मेरे सखी। देखतेही रहगई बांकी अदा मनमोहनी ॥ गले गजरा दृगन कजरा शीस सेहरा है सजा। झुकरहीं कलँगी छबीली क्या अदा मनमोहनी ॥ चन्द्र मुखपर जुल्फ़ छिटकी भाल केसर के तिलक। श्रवन कुण्डल की प्रभा ऐसी अदा मनमोहनी ॥ श्यामतन जामा ज़रीका कटि में पीताम्बर लसे। कंज कर कंकन लसै नोखी अदा मनमोहनो॥ अंग अंगन प्रति सुहावैं ब्याहआभूषण रुचिर। देख छबि मनमथ लजै लौनी अदा मनमोहनी॥ क्या बना रघुराज सुन्दर लाड़ला कञ्चन कुँअरि। देख तन मन प्रानधन वारी अदा मनमोहनी ॥ ६४ ॥

बनरा।

बनाजीवन आयो अजब रँगीलौ।
श्यामल सुभग किशोर मनोहर सोहत परम छबीलौ॥ मिथिला-

पुर की नर नारिन सखि देखति रूप ठगीलौ। कञ्चन कुंअरि कहूं क्या उपमा प्यारौ गुनगरबीलौ ॥ ६५ ॥

बनरा।

सखीरी बना लखआई, मेरे नैनों से छबि नहिं जाय ॥ सिर शोभित सोनेको सेहरा, फुदरी रतन जड़ाय। चन्दन खौर जुल्फ घुँघरारी, अञ्जन नयन सुहाय ॥ चितवनि बान चलावत मोहिय, मारे मृदु मुसक्याय। कञ्चन कुँअरि सियाबर प्यारौ, लै गयो चित्तचुराय ॥ ६६ ॥

बनरा।

बना तोरी नजरिया में जादू भरे ॥ तिरछी तकन तीरसी लागत नर नारिन बेहाल करे। सिरपर ताज जुलफ घुंघरारी मोहनमाला गुञ्जगरे॥ श्यामलगात केशरिया जामा श्रवणन कुण्डल जलजपरे। कञ्चन कुँअरि देखि छबि भूली नासामणि मो प्राण हरे ॥ ६७ ॥

अथ गारी भोजन के समय की।

गारी।

ब्याहन राम जनकपुर आये दशरथ राजदुलारे जू।
चारहु राजकुँअर रँग भीने रघुकुल प्रानप्यारे जू ॥

सिर सोनेको सिहरा सोहत जगमग रतन जड़ाये जू ।
कुण्डल लोल कपोलन झलकें हलकें चौप चढ़ाये जू ॥
भूषण बसन सुभग तन सोहैं रूप छटा उजयारी जू ।
घुँघरारी अलकैं मुख छलकें चन्दन खौर सवांरी जू ॥
मंद मंद मुसक्यान मनोहर हँस हँसके मुख मोरें जू ।
बीरन खात बतात सखिन सँग चितवनि में चितचोरें जू ॥
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन चढ़े तुरंग नचावैं जू ।
रूप अनूप बिलोक गगन से देव सुमन बरसावैं जू ॥
यह शोभा लख पुरनर नारिन आनँद उर न समावैं जू ।
कञ्चन कुँअरि प्रानधन जीवन पलक ओट नहिं जावैंजू ॥

गारी ।

जेवन आये जनकमहल में दशरथ राजदुलारे जू । सासु सुनैना अपने करसे हरषित चरन पखारे जू ॥ रतन जड़ाऊ चौकिन चारहु सुन्दर बर बैठारे जू । शीतल जलभर झारीं ल्याई परन लगे पनुवारे जू ॥ बहु पकवान मिठाई मेवा विंजन अधिक सँवारे जू । पुरी कचौरी साग अथानें मोदक मधुरे न्यारे जू ॥ दूध मलाई मिसरी गेरी पावत स्वाद प्यारे जू । जैंवत जान लाल मिलि सजनी व्यंग बचन उच्चारे जू ॥ माय कौशला तुम्हरी रघुबर जनकपुरी पगुधारे जू । सेवा करें आय इहां नृपकी यह मनसाद हमारे जू ॥ सुन गारीं विहसत रघु-

नन्दन मन आनंद अपारे जू । कञ्चन कुँअरि करावैं अचवन शोभा लखि बलिहारे जू ॥ ६९ ॥

कुँअर कलेऊ।

ध्वनि श्रीरामकलेवा की।

कुँअर कलेऊ करन लाल जू, राजमहलको जैहैं। तब सखि चलबो उनके मिलिबे, उतै कछू वे कैहैं ॥ इत हमको नहि मिलति छरे हैं, उतै अकेले मिलिहैं। फिर हम तुम सबहिंन के हिय के, सरस सुमन से खिलि हैं ॥ यहै विचार करैं सब भामिनि निज निज भवन दुआरिन। तबलग निकसे कुंअर लाडिले, चढ़े तुरङ्ग सवारिन ॥ सज सज के बर थार आरतीं,(श्री)जनकमहल को धाईं। झुन्ड झुन्ड हिलि मिलि के सिगरीं, दै दै के गलबाहीं ॥ पहुंचीं जाय राज मन्दिर में, राजकुँअर जहँ सोहैं। तीन लोकको विभव सम्पदा, नैक भ्रकुटि में मोहैं ॥ बहु प्रकार आरतीं उतारीं, चरणन शीस नवाये। बिनती कर कर कहैं सबै मिलि, आज जन्म फल पाये ॥ राई लौन उतार सुनैना, टौना डीठ निवारै। प्रेम प्रमोद भरीं मिथिलानी, भोजन सौंउँज सँवारे ॥ बहु प्रकार मेवा मिठाइ के, सज २ थार लिआईं। घृतपयपक्क, पदारथ जेतिक पाक शास्त्र विधि गाईं ॥ मालपुआ हलुआ मलाइके मोदक मिसरी डारे। खस्ता पुरीं कचौरी पापर, खजाला शक्कर पारे ॥ चटनो साग सलौनै शिखरन, फल दल अंकुर मूली। रुचि रुचि परसों हिय में हरषें अंग समाय न फूली ॥ विञ्जन सकल परोसे छण में, बैठ गईं सब गोरी। करन कलेऊ लगे लालजू,

सुनि सुनि गारीं कोरीं ॥ नव नव रचना व्यंगन बचना, नाना राग सुनावैं। अपने अपने उरकि लालसा, गारिन में दरसावैं ॥ सुनि२ के बर कुंअर लाडले, मनही मन मुसक्यावैं। देखि परस्पर कछु न कहत हैं, इक एकहि सकुचावैं ॥ यहि प्रकार करि कुँअर कलेऊ, अचवन कियो सुहावन। जाय पधारे सिद्धि महल में, त्रिभुँअन के मनभावन ॥ कर सरहज स्वागत सुगंध शुचि, पानन विरीं लगाईं। अलिवेलीं अनुराग भरीं नव, ननदेऊ ढिग ल्याईं पान पाय बैठे प्रयंकपर, सोहैं चारिहु भाई। सिद्धि आदि सब सारीं सरजें, चरणन शीस नवाई ॥ जोर पांणि विनवें सब बामा, कहैं लाल अब जैहो। हम अबलान को संग राखिहो, कै तुमही इत रैहो ॥ एक सखी बेदिल ह्वै बोली, सुनो सबै बड़ स्यानो राजमहल में मैं सुनि आई, तुम क्यों भई दिवानी ॥ भोरहिं सांझ तयारी होरहि, इन्हैं अवधपुर जानै। सहित सहेलिनि ननँद नवेली, सो इनके सँग रानै ॥ यह सुनि कैं सब चौंकपड़ी हैं, जेती अबला बाला। हाय हाय कर जाय गिरीं हैं, चरणन तर बेहाला ॥ डार मोह की फाँस सबन पै, तुम्हैं अवधपुर जानै। हम विरहिन के प्राण लाड़ले, कहु किहि विधि अब रानै ॥ नयन बान भौंहिन कमानि सों, रौम रौम तन छेदे। प्रथम माझ मरसान धराकर, हम अबलन पर वेदे ॥ बाना बलि की विद्या गुरु नैं जेतिक तुम्हैं सिखाई। सो सिगरी हम अबलन ऊपर, लालन तुम अजमाई ॥ अबला कुल शोकाकुल होरहिं, पड़ीं भूमि में सिगरीं। माफ करो अवधेश लाड़ले, हमरीं बनीं व बिगरीं॥

अति अधीर लख रसिक शिरोमणि, सबको मन समुझायो। श्री करकमल अमल अनुरागिनि, स्वरस सुहाग सुपायो॥ द्वापर में जब कृष्णरूप ह्वै, हम ब्रज में अवतरिहैं। तब तुम सब की उतै लालसा पूरी मन की करि हैं॥ निश्चय करिके धरिलो उर में, इहिमें फरक न परि है। वैसे तुमको सुनौ लाड़िली, अवध जनकपुर घर है॥ शीलनिधान सनेह सुधाकर, सिद्धि सदन से आये। सब सरहज सारिन सों मिलि के, सासु के पास सिधाये॥ मातु सुनैना मोद लियौ उठि, मोद भरी दुलरावें। गहवर हिय पय अवत पयोधर, मुखहू बचन न आवैं॥ मस्तक घ्राण कियो निमि रानी, नेग निछावरि दीनै। लहि आयुस आए रघुनन्दन, राजसभा रँग भीनै॥ करि मिलाप दै दरस लाभ कों, फिर जनुवासे साजे। नम्र प्रणाम कीन्ह कुलगुरु को, आशिष लह कर ब्राजे॥ कञ्चनकुँअरि दई मन भावन, अचल भक्ति अन पाई। मोद बिनोद महल मिथिला में, नित नूतन अधिकाई॥ जो यह लीला कहैं प्रेम सों, सुनै सो मोद बढ़ावै। निरखै निज नैनन सों, निशि दिन रास रसिक रस पावै॥ ७० ॥

अथ पद व्याह होकर श्रीमिथिलाजी से विदा होने के समय के।

भजन।

सियबर प्यारे दरश कब दैहौ॥
चन्द्र बदन सुखसदन दिखाकर, नैन चकोर जुड़ैहौ। रसिक

सुजान प्रान जीवनधन मधुरे बोल सुनैहौ ॥ नेह लगाय छकाय प्रेम रस सरहज की सुधि लैहौ। कंचन कुँअरि जोग थलियन में बीज बिरहकौ बैहौ ॥ ७१ ॥

पद।

तनक इत हेरहु प्रान पियारे ॥

नेह लगाय चले निरमोही हे अवधेश दुलारे। पावत जिनहि कठिन साधन से शिव विधि जोग समारे ॥ सो हम लाल सुलभ करपाये दुर्लभ दरश तुम्हारे ॥ कञ्चन कुँअरि नेह जिन टोरो जिय की जानन हारे ॥ ७२ ॥

पद।

चोरचित कित चले राजकिशोर ॥

अवध जाइ सुधि भूल न जइया पुनि पुनि करत निहोर। प्रेम प्रीति प्रतिपालत रहियो हेर आपनो ओर ॥ हम अबला कछु और न जानत बिनवत दुहुकर जोर। कञ्चन कुँअरि जान निज दासी दीजो दरस बहोर ॥७३॥

दादरा।

विनऊँ सियाप्यारी दुलारी तुम्हैं ॥

पियसँग अवध नगर को जैहौ लैहौ संग कि नाहीं हमें ॥ जो तज जाव कहा बस मेरो, तुमस्वामिन सिवकाइन में ॥ जाय अवध सुधि भूल न जैयौ, राखैं रैयौ सुरित मनमें ॥ कञ्चन कुँअरि कृपाकर कबहूं पत्र-सन्देश पठैयौ हमें ॥ ७४ ॥

भजन।

ललीं फिर कब ऐसे सुख दैहौ।
जैसई हिलमिल सहियत निसदिन तैसे फिर बतरैहौ॥ सुरपतिपुर लख लजत अवधपुर तिहिपर शोभा दैहौ। सासु ससुर परिवार प्यारवस पलसम दिवस बितैहौ॥ दैहौ दरश कबहुं फिर हमको चरन शरण अपनैहौ। हम दासी दरशन की प्यासी सुन्दर बदन दिखैहौ॥ मिथिलापुर बासिन हम सबसें नातौ नेह निबैहौ। कञ्चन कुँअरि कठिन सुरनर कों तेपद सिर परसैहौ॥ ७५॥

पद।

काहेसे पिया फेरत हौ अब नैन।
जबसे मिले पलक नहिं बिछुरे दीनों अति सुख चैन॥ चलन चहत तज अवधनगर को कैसे कटैगी दिन रैन। नेह बढ़ाय छकाय प्रेम रस फांसलियो मनमैन॥ केहि अपराध निठुरहोय हमसे अबलागे दुख दैन। कञ्चन कुँअरि सरन रखलीजे दीजे निजपद ऐन॥७६॥

भजन।

रामचन्द्र मुखचन्द्र सुहाई॥
सिरपर पाग जरकसी राजत तिहिपर कलगी रतन जड़ाई। घुँघरारी कारी अति जुलफैं भाल तिलक श्रीबिंदु सुहाई॥ भृकुटी बंक विलोकन तिरछी दृग खंजन अञ्जन सुखदाई। गोल कपोलन झलकत सुन्दर श्रवनन कुण्डल दुति दरसाई॥ श्यामगात जरकस-

कौ जामा पीताम्बर कटि फैंट कसाई । अंग विभूषण सुभग सुहावनि मनभावनि छबिबरन न जाई ॥ मंद मंद मुसक्यात छबीले हँस हेरन चित लेत चुराई । गजगति चलन बजन पग नूपुर कञ्चन कुँअरि निरखि बलजाई ॥७७॥

अथ श्रीमिथिलाजी से व्याह कर अवध में आगमन समय के पद ।

पद ।

व्याहि घर आये राजकुमार ।
सियसम बहू मिली बड़भागिन सासु करैं मनहार ॥ वार फेर जल पियत कौशिला तोरत तृन महि डार। कञ्चन कुँअरि करत निवछावर मानक मोती हार ॥ ७८ ॥

पद ।

लखौ सखि सिय दुलही गृह आई ।
सुखमाशील सकल गुनआगर सागर रूप लुनाई ॥ पटतर योग्य एक नहिं आवत उमा रमा सकुचाई। कञ्चन कुँअरि मनोहर जोरी राखिय नयन बसाई ॥७९॥

अथ श्रीराम बिरह में मिथिला बासियों की व्याकुलता के

पद ।

बतादो कोइ अवधनगर की गैल ॥
जहां बसत चितचोर हमारे श्याम छबीले छैल । जिन मन छीन

लियो बरबस सखि प्रेम फांस गलमैल ॥ नहिं जानत रसरीति प्रीति की करत बधिक के फैल । कञ्चन कुँअरि मिलैं तो पलटौ पलट देऊंगी पैल ॥ ८० ॥

दादरा ।

कहां गये दिलके दामनगीर ॥
बिन देखे पल कल न परत है सुन्दर श्याम शरीर । जबसे गये मोरी सुधहु न लीनी ऐसे भये बेपीर ॥ अवध छैल पिय अति निरमोही वे लक्ष्मन के बीर । कञ्चन कुँअरि दरश बिन उनके नैनन बरसत नीर ॥ ८१ ॥

दादरा ।

सखीरी कहिं देखे अवध बिहारी ॥
क्रीट मुकुट पीताम्बर सोहै कुण्डलकी छबि न्यारी । सुन्दर रूप मोहनी मूरति कोटि भान उजियारी वा हंसन मुसक्यान माधुरी चितसे टरत न टारी । कञ्चन कुँअरि नवल मनमोहन विहँस मोहनिया डारी ॥ ८२ ॥

पद ।

कब मिलि हैं वे राजदुलारे ॥
जिन मनमोह लियो सखि मेरो नैन बान तिरछे तकमारे । क्रीट मुकुट माथेपर सोहै भाल बिशाल नैन रतनारे ॥ गोल कपोलन कुण्डल झलकें घूंघरवारी जुलफन वारे । श्यामगात पीताम्बर राजै करकञ्जन धनु शायक धारे ॥ नूपुर बजन धरन पग धरनी गज-

गति चलन मदन मतुवारे। कञ्चन कुँअरि प्रान प्रीतमपर तनधन मान निछावर डारे ॥ ८३ ॥

भजन ।

मैं सखि उनके हाथ बिकानी ॥
जो अवधेश किशोर छबीले सुन्दर श्याम रूप गुणखानी । मन मेरो हँस नैन सैन में बरबस छीन लियो दिलजानी ॥ कुल मरजाद लाज गुरुजनकी सब तज उनपर भई दिवानी । कञ्चन कुँअरि रमै तनमन में वे मनमोहन छैल गुमानी ॥ ८४ ॥

दादरा ॥

पिया प्यारे बिना पल परत न चैन ॥
जबसे बिछुरे अवधछैल सखि तबसे हमको भये दुख ऐन। बिरह पीर ब्याकुल कल नाहीं तारे गिन गिन बीतै रैन ॥ जाय सँदेश कहो कोऊ उनसे अब निठुराइ तजौ सुखदैन । कञ्चन कुँअरि बिकल अति प्रीतम दरस दिखाव जुड़ावौ नैन ॥ ८५ ॥

दादरा ।

नृपति सुत आली हैं बेपीर ।
छलबलकर चित चले छबीले छैल छली बांके रघुबीर ॥ लै चित चतुर गए मिथिला तज दगादार लछिमनके बीर। कञ्चन कुँअरि रहै रस नाहीं रसिकराय कैसे रनधीर॥ ८६ ॥

माड।

मेरे जियरा मै खटकी आन समलिया सैन नैनकी ॥
॥दोहा॥ तकन तिरीछी तीरसी। चली जिगर मै ऐन ॥ तनमन घायल करदियो। कसक रही दिन रैन ॥ समलिया० ॥ दोहा ॥ अरे अहेरी निरदई। कौशल राजकिशोर ॥ मम मन बरबस छीनकें। कहां छिपे चितचोर ॥ समलिया० ॥ दो० ॥ मोहनिया सी पढ़दई नृप दशरथ के लाल। बिबस भई सुधि नारही फँसी प्रेमके जाल ॥ ॥ समलिया० ॥ दो० ॥ कञ्चन कुँअरि कहा करूँ, सूझत नहीं उपाय। बिरह ज्वाल छिन छिन दहै बिन पिया रहो न जाय ॥ ॥ समलिया० ॥ ८७॥

गजल।

प्रानो का प्रान प्यारा अवधेश का दुलारा।
दोनों द्दगन का तारा बिसरै नहीं बिसारा ॥
जाती थी कल चली मैं अलियों के सँग गली में।
आके मिले अचानक जादूसा पढ़के डारा ॥
वह श्यामली छबीली बांको अदा रँगीली।
चितवन गजब कटीली तक नैन बान मारा ॥
काफिर कठिन जिया है ज़ालिम सिया पिया है।
कञ्चन कुँअरि किया हैं ज़खमी जिगर हमारा ॥ ८८ ॥

रेखता।

दिलदार यार प्यारे श्याम झलक बताजा ॥
आखैं तरस रही हैं इनको दरस दिखाजा ॥ दिलदार यार० ॥

सुनकर बिनय हमारी, कीजे रहम बिहारी, बिरहा में मैं तड़पती दिलकी तपन बुझाजा॥ दोनो द्रगन के तारे, अवधेश के दुलारे, अब भी पिरान प्यारे कुछ भी तो शरम खाजा॥ दिल०॥ कञ्चन कुँअरि तुम्हारी व्याकुल विथा न ही है। बोली मधुर सुनाजा, मिथिला में फिरसे आजा॥ ८९॥

पद।

सखी मोहि कब मिल हैं श्याम सुजान।
जबसे बिछुर गये पिया प्यारे पल न लहत कल प्रान॥ नैन सैन अति पैन मैन सर कसकत हैं दुखदान। नेह लगाय गये मिथिला तजा रघुकुल पंकज भान॥ निठुर भये जिया दरद न जानै, निपट कपट की खान। कञ्चन कुंअरि बिरह बस आतुर मिलहु जानकी जान॥ ९०॥

दादरा।

लगन तुमसे लागी अवधबिहारी।
वा हेरन मुसक्यान माधुरी टरत न चितसे टारी॥ उरझे नैन नहीं अब सुरझत ऐसे निपट अनारी। तिरछो सैन मैनसर मानों हन घायल करडारी॥ तबसे बिकल बिहाल भई अति कठिन पीर हिय भारी। कञ्चन कुँअरि देह सुधि भूली लोक लाज तजिडारी।९१।

पद।

जुलफों ने मन मोह लिया है।
घुँघरारी कारी नागिनसी निरखतही डसप्रान लिया है॥ नैन

दुनाली भर तक घाली कठिन शिकारी सिया को पिया है। कस-कत बीर पीर अति बांकी तजान चहत तन मोर जिया है ॥ इतनो सुजस लहत जो आली जो तोसे हो जाय किया है । कञ्चन कुँअरि मिलादे उनको तनमन जिनपर वार दिया है ॥ ९२ ॥

दादरा ।

मन हरलियो मुखचंद्र दिखरायके ।
शीश मुकुट कानन बिच कुण्डल भाल तिलक कजरा दृग लाइके
जालिमजोर जुलुफ के जालन बरबस मन मृग लीनो फँसाइ के ॥
बलि बलि जाउँ मधुर बोलन पर पान खान हेरन मुसक्याइ के ।
मंद मंद अति गत गरबीली चलत चाल गजराज लजाइ के ॥
कञ्चनकुँअरि करी घायल तक मारी हिय दृग सैन घुमाइ के॥ ९३

दादरा ।

दिल लैगये चुराकें सिया के पिया ॥
जबसे लखी मैंने श्यामलीसूरति चैन नहीं दिन रैन जिया। तिरछी हेरन मुसक्यान माधुरी खटक रही मेरे बीच हिया॥ अब नहि लेत खबर बेदरदी जनक लड़ैती को जादू किया॥ ९४ ॥

सारंगा ।

राजकुँअर बिन देखें मन माने न मोर ॥
भृकुटी कुटिल सुबंक बिलोकन दृग कजरे की कोर। रूप मोहनी मंत्र साधकैं हँस मारी मो ओर॥ तब सें डरी परी कहरत हौं

मिथिला शहर की खोर। कपटी छैल कपट छल कीन्हों निरमोही चित चोर॥ कञ्चनकुँअरि कवै अब मिलि हो रघुबर राजकिशोर॥ ९५॥

सारंगा।

पिया प्यारे ने मुझको घायल किया॥

भौंह कमान निशान लगाकें नैन बान हिय मार दिया। हौं व्याकुल सखि तब से कहरत नहिं आवत है चैन जिया॥ नृपति किशोर मोर सुन आली चितवनि में चित चोर लिया। कञ्चनकुँअरि तरस नहिं आवत बेदरदी हैं सिया के पिया॥ ९६॥

दादरा।

घायल मोहि करगये अवधकिशोर॥

तक दृग बान हिये हन दोनों तलफत तज गये जियरा मोर। अति सुकुमार सुभगतन श्यामल ना जानू कस हृदय कठोर॥ को अब पीर हरै मोरी सजनी बिना मिले वह चित के चोर। कञ्चनकुँअरि दरश अब दीजे बिनय करौं प्रभु दोउ कर जोर॥९७

दादरा।

हँसन तुमरी घायल किया जिया मोर॥

हँस हेरन मुसक्यान माधुरी मोहलियो चितचोर। जानत हौ तुम जंत्र मंत्र कछु हे नृप राजकिशोर॥ अवलोकत तन मन सुधि भूली लोक लाज दई छोर। कञ्चन कुँअरि नेह कर तुमसें जग सें दीनो टोर॥ ९८॥

दादरा ।

कहां गयेरी वे दिवश चैन के।
हँस हिय ललक मिलनि रघुबरकी होगई री जिमि स्वप्न रैनके ॥ तिरछी तक तक सैन चलावन खटकत री हिय बान नैनके। कञ्चन कुँअरि कबहुं फिर आहैं वेही दिन आनन्द दैनके ॥ ९९ ॥

दादरा धुन कजरी ।

दशरथ राजकिशोर मोपर जादू कीना रे ॥
मृदु मुसक्याके सैन चलाके मन हरलीना रे। निशि दिन बिकल रहत सखि जैसे जल बिन मीना रे ॥ हाय दई निरदई श्याम ने दरद न चीना रे । जबसे अवध गये रघुनन्दन सुधहु न लीना रे ॥ एक बार निज कर कमलन लिख पत्र न दीना रे। कञ्चन कुँअरि प्रान प्यारे बिन किस बिध जीना रे ॥ १०० ॥

दादरा ।

दरश कब देहो जीवन प्रान ।
श्यामली सूरत दृगन बसी है हिय में चुभे दृग बान ॥ कहरत डरी दिवस निशि प्यारे ब्याकुल बिरह बिथान। कञ्चनकुँअरि मिलहु रघुनन्दन रसिक जानकी जान ॥ १०१ ॥

भजन ।

मिलादे सखि सियाबर राजकिशोर ॥
श्यामबदन सुखसदन छबीले मेरे चितके चोर । क्रीट मुकुट

मकराकृत कुण्डल जुलफैं जालिम जोर ॥ भाल- बिशाल तिलक केशरको कजरारी दृग कोर । मृदु मुसक्यान तिरीछी हेरन कसकत है जिया मोर ॥ तनक चितै टोना पढ़ डारो जनकनगर की खोर । कञ्चन कुँअरि दरश प्रभु दीजे बिनय करौं करजोर ॥ १०२ ॥

दादरा ।

दरश बिन तरसैं नैन हमारे ॥ अवध छैल पिया प्यारे ॥ श्यामली सूरत दृगन बसी है, बिसरत नहीं बिसारे । भूल गये गृह काज साज सब लोक लाज सुख सारे ॥ सानदार सहजोर तिरीछे दृग खञ्जर हिय मारे । घाइल भई दिवस निशि कहरत को अब मोहिं सभारे ॥ बिना मिले महबूब श्यामरे ब्याकुल प्रान बिचारे । कञ्चनकुंअरि तिहारी लालन अब पिया दरश दिखारे १०३

पद ।

दरश मोहि दीजे अवध बिहारी ॥
अबकी बेर कृपा प्रभु कीजे येही अरज हमारी । तुम बिन मोकहँ कल न परत है नागर नवल खिलारी ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया जैसे मीन बिन वारी । कञ्चनकुँअरि कृपाल कहाकर काहे सुरत बिसारी ॥ १०४ ॥

भजन ।

सखीरी मन लैगये अवधकिशोर ॥
मंद मंद मुसक्याय दरस दै छीन लियो चित चोर । श्यामली सूरति

माधुरी मूरति नयनन बसगई मोर ॥ अलक झलक लखि पलक लगति नहिं डारत मैन मरोर। कञ्चन कुँअरि करी घायल मोहि तक तिरछी दृग कोर ॥ १०५ ॥

इति मिथिलावासियोंके विरह व्यवस्था के पद सम्पूर्ण ।

अथ राजगद्दी के समय के पद ।

भजन ।

राजत राजसभा रघुराई ॥

रतन सिंघासन सियजुत सोभित रबि शशि कोटि लजाई। लछिमन छत्र भरतकर विजन अंगद चँवर ढुराई ॥ पानदानकर लिये शत्रुहन पीकदान कपिराई। जामवंत कहैं मंत्र श्रवन लग राज नीति दरसाई ॥ हनुमत जुगल कमलपद चापत सनमुख रुखटक लाई। कञ्चनकुँअरि आरती करतीं लख शोभा सुखदाई ॥१०६॥

पद ।

देखौ सखी यह शोभा मनभाई ॥

रतन जड़ित सिंहासन सुन्दर तापर सिय रघुराई। सिय सिर चारु चन्द्रिका झलकति पिय सिर मुकुट सुहाई ॥ उत मणिहार पदिक की शोभा, इति तिलरी मनभाई। मृदु मुसक्यात बतात परस्पर, छिन छिन पान चबाई ॥ यह उपमा पटतर केहि दीजे, रति पति

निरख लजाई। कञ्चन कुँअरि अनूप रूप लखि; बार बार बलि-जाई॥ १०७॥

पद।

आज सुदिन शुभघरी सुहाई।
रतन सिंघासन सिय सँग शोभित, राजिव नयन राम सुखदाई॥
प्रमुदिति प्रिय परिजन पुरजन सब, अनुज सखा मंत्री कपिराई। बन्दी मागध सूत गायका, गावहिं यश कीरति अधिकाई॥ बर्षहिं सुमन हर्ष सुर ललना, नाचहिं गावहिं भाव बताई। विप्रवृन्द उच्चरहिं बेद बिधि, कुल गुरु तिलक करहिं हरषाई॥ कौशिल्यादि मातु मन मोदित, सम्पति सकल लुटाई। कञ्चन कुँअरि तोर तृण डारहिं, वार बार बलिजाई॥ १०८॥

इति श्रीराजगद्दी के पद सम्पूर्ण।

अथ बसन्त वर्णन।

आज बिहार बसन्त लखौरी॥
विथकिति बन बागन बीथिनि में, नगर डगर में बगर रहोरी। कुञ्ज कुञ्ज अलि पुञ्ज पलोटति, अंचल राग पराग परोरी॥ नवकोमिल दल अति कोमिल थल, सरजू सलिल सुरंग भयोरी। पारिजात चम्पक तमाल मिलि, रहे रसाल बौर झुकि झोरी॥ बोलत कल बिहंग बोलिन में, जय जय श्रीमिथिलेश किशोरी। करि श्रृंगार सौउँज लियो बनितनि, समय सुहावनि पावन कोरी॥ अरगज मृग मद

कुम कुम ओलिन, चोल निचोलनि गोलनि झोरी । पीत चूनरी चमकि चन्द्रकनि, दामिन लरजनि तन दुति ओरी ॥ कोऊ भामिनि भुज मेलि कण्ठसों, कोउ करकञ्जमञ्जरिनि मोरी। अलबेली अनुराग भरी नव, गावति गीत चलीं तेहि ठौरी ॥ जहँ सौन्दर्य ललित ललना मिलि, नित निकुञ्ज ऋतुराज मचोरी । कञ्च महल रुचिर सिंघासन, राजति रशिक मुकुट मणिजोरी ॥(श्री) चारु शीलाजू लिये मोरछल, चन्द्रकलाजू चामर ढोरी । केतिक बीन पखावज बाजहिं नाचहिं नाच छमाछम छौरी । उमग्यो अति अनुराग परस्पर, दम्पति प्रीति पयोनिधि फोरी । कामिनि केलि कुतूहल लखि तहँ, रति-पति हूं की मति भइ भोरी ॥ चलन लगीं पिचकारी मूठें, रूठें जो जिहिपै रंग बोरी । पिय करकमल अमल रस भीने, गोल कपोलन ओलति रोरी ॥ (श्री) सिय रुख पाय सखी गन दीनो, अञ्जनि राग महावरि घोरी । सकल श्रृंगार प्रियासम कीनो, सेंदुर मांग भरी थोरी थोरी । शची शारदा कहहिं धन्य वे, जिनको ये सौभाग्य मिलोरी । आरति करहिं अपनपौ वारहिं, अलिगन हरष निरख तृन तोरी ॥ १०९ ॥

अथ होली रहस्य ।

होली काफी ।

होरी खेलत अवधबिहारी । संग मिथिलेश दुलारी ॥

हिलि मिलि खेलें फाग परस्पर, नवनागर सुकुमारी । अपने अपने

दाव तकत हैं, छलबलकर छलवारी। नवल होरी के खिलारी ॥ होरी खेलत० ॥ कोइ सखि रंग गुलाल उड़ावत, कोइ घालत पिच-कारी। कोइ सखि दौर पकर प्रीतमको, सिय ढिग आन पधारी। बनाकर सुन्दर नारी॥ होरी खेलत० ॥ कनकमहल में केलि कुतू-हल, को कवि बरनें पारी। कञ्चन कुँअरि जुगल जोड़ी यह, जीवन प्रान हमारी। जाउँ इनपै बलिहारी॥ होरी० ॥ ११० ॥

होली काफी।

खेलत रंगमहल में सिया संग राजदुलारे॥

लाल गुलालन बादर छाये, छूटत लाल फुहारे। लाल जड़ित मणि भूषन सोहत, लाल बसन तनधारे। लाल सब साज सँवारे॥ खेलत० ॥ तोसक गिलम लाल महलन में, फर्स चाँदनी सारे। खेलत बाल लाल मिलि होरी, निज निज दाव बिचारे। ललित लालन खिलवारे॥ खेलत० ॥ लपट झपटकर झटक छबीले, किए छल छन्द छलारे। भेंटत बाल निशंक अंकभर लाल मदन मतुवारे। ख्यालकर निपट अनारे॥खेलत०॥ कञ्चन कुँअरि निरखि लालन छबि, तन मन धन बलिहारे। भूलि गई कुल लोक लाज सुधि, जबसे नैन निहारे। विहँस जादू पढ़ डारे॥ खेलत० ॥१११॥

होली काफी।

को खेलै ऐसी होरी। करत रघुबर बाराजोरी ॥

नाकौ गहैं खड़े पनघटको, छैल साँकरी खोरी। धूम मचावत रंग

16726

बरसावत, गावत हो हो होरी। भरत अंकम जोराजोरी॥को खे०
देखौ अली गली बिच मोहन, कैसी करी गति मोरी। केशर रंग
गुलाल डार सिर, बिहँस मली मुख रोरी। झटक बहियां झक-
झोरी॥ को खेलैं०॥ सारी तार तार करडारी, मोतिन की लर
टोरी। कञ्चन कुंअरि मुरक गइ बेसर, में बहु भाँति निहोरी।
सुनी उन एक न मोरी॥ को खेले०॥ ११२॥

होली काफी।

रसिया अवधबिहारी। लाल मोपै रंग न डारौ॥
मैं नइ वाल अबहिं इत आई, सकुचत है जिय म्हारौ। हों
भोरी छलछन्द न जानौं, छैल न फैल पसारौ। करौ हमसे मत
रारौ॥ रसिया०॥ तुम्हैं न शंक ललन काहूकी, तिहुंपुर राज
तुम्हारौ। अवधनगर नर नारि चवाई, करहिं चवाव हमारौ।
तनक जिय सोच बिचारौ॥ रसिया०॥ बिगरी वात बनै न
बनाये, कोटिन भांति सँभारौ। कञ्चन कुँअरि कहैं करजोरी, अबकी
नाथ उबारौ॥ आपनी ओर निहारौ॥ रसिया०॥ ११३॥

होली काफी।

पिचकारी तक मारी। गैल बिच छैलबिहारी॥
आज अचानक मिले दईरी, विपिन प्रमोद मझारी। गई रही सरजू
जल भरने, लिये शीसपर झारी। झपट झटकी उन सारी॥पिच०
हौं न कछू बोली ती कैसउँ, लाज सकुचकी मारी। भर भर रंग

गुलाल डार उन, उलट दई जलझारी। भिजै दई चूनरि सारी ॥ पिचकारी० ॥ यह कर हाल लाल मुसक्यावत, गावत दै दै तारी। कञ्चन कुँअरि बनै न जात गृह, डर लागत मोहि भारी, सासु सुन देहै गारी ॥ पिचकारी० ॥ ११४ ॥

होली काफी।

एहो राजकिशोर। तुम्हें आज होरी खिलाऊँ ॥

लो आवो दल साज आपनो, अनुज सखन बलि जाऊँ। आवत है इत जूथ सखिनके, मैंहूं सजकर आऊँ। संग सिय स्वामिनि ल्याऊ ॥ एहो० ॥ घोर घोर रंग जोर धरो है, अबीर गुलाल मगाऊँ ॥ पिचकारिन बौछार करूँगी, केशर कीच मचाँऊँ। ललन नई सान दिखाऊँ ॥ एहो० ॥ ठाड़े रहो धीर धर जिय में, सावधान यह ठाऊँ। कञ्चन कुँअरि आज सब तुमसे, मैं निज दाव चुकाऊँ। छबीली नार बनाऊँ॥ एहो० ॥ ११५ ॥

होली काफी।

रघुबर राजकिशोरी। महल बिच खेलत होरी ॥

करझटकत घूंघट पट खोलत, मलत कपोलन रोरी। कञ्चन की पिचकारी घालत, तक मारति उर ओरी ॥ महल बिच० ॥ सोने के थारन अतर अरगजा, ले आईं सब गोरी। हिलि मिलि फाग परस्पर खेलत, केशर रँग में बोरी ॥ महल बिच० ॥ अपनी अपनी घात तकें दोउ, दाव करत बरजोरी। कञ्चन कुँअरि नृपति

सुत हारे, जीती जनककिशोरी ॥ महल बिच० ॥ ११६ ॥

होली काफी।

फागुन पिया छाय विदेश रहेरी। मैं तो खेलौं कौन सँग होरी॥ बाजत डफ मृदंग धुनि आली, सुनि कल जिय न लहेरी। केशर रंग बहै वीथिनि बिच, मोदृग नोर बहेरी॥ फागुन पिया० ॥ जेदिन कामिनि काम केलिके, वे कस निठुर भएरी। यहि अवसर रँग बरष हरष सब, विरहिनि दहनि दहेरी॥ फागुन पिया० ॥ कञ्चन कुँअरि छैल रघुबर बिन, दूसर कलेश सहेरी। बेगि मिलहु रघुलाल रँगीले, बिरहिनि विथा अहेरी॥ फागुन० ॥११७॥

होली काफी।

दरस दैके काहे छिपेहो बिहारी। मोहिं विरह बिथा भइ भारी॥ बन प्रमोद की कुञ्जन गलियन, ढूंढ ढूंढ मैं हारी। काहे को प्रभु हँसी करत हो, मैं तो शरण तुम्हारी॥ दरस दैके० ॥ सब सखियाँ मिलि होरी खेलैं, जो प्रीतम की प्यारी। कञ्चन कुँअरि भले फागुन दिन, आय मिलौ बलिहारी॥ दरस दैके० ॥ ११८ ॥

होली काफी।

रँगीले दोऊ रंगमहल रँग होरी। सखि खेलति प्रीति न थोरी केशर रंग भरे पिचकारिन, अबीर गुलाल की झोरी। होत मृदंग मँजीर झाँझ धुनि, बाजत ताल तमोरी॥ रँगीले० ॥ उत रघुराज

रसीले रसिया, इत मिथिलेश किशोरी । अति चितचाव दाव से खेलत, गावत हो हो होरी ॥ रँगीले० ॥ कञ्चनकुँअरि प्रानजीवन धन, अचल रहे यह जोरी । अचल रहे सौभाग फाग को, नवला नव रस बोरो ॥ रँगीले० ॥ ११९ ॥

होली काफी ।

सखोरी कोऊ राज किशोर नवीनै । सुन्दर श्याम प्रवीनै ॥ हों आयी प्रथमैं नइहर से, मैं उनको नहि चीनै । औचक आज़ मिले मोहि मग में, अनुज सखन सँग लीनै ॥ सखीरी० ॥ खेलति फाग रूप मद छाके, रसिक राज रँग भीनै । कञ्चन कुँअरि बची नहि उनसे, कोटि जतन मैं कीनै ॥ सखीरी० ॥ १२० ॥

होली काफी ।

विनय मोरी राजकुँअर नहिं मानी । सखी ऐसो रूपगुमानी ॥ सरयू तीर वीर मोहि औचक, घेर लई उन आनी । कीन्हो हाल लाल जो मेरो, तोसों कहत बखानो ॥ विनय० ॥ डारो रङ्ग गुलाल ताल दै, तनक करी नहिं कानी । भीजे चीर अङ्ग सब दीखत। गुरुजन लाज लजानी ॥विनय० ॥ बर बस मोर, चोर चित लीन्हो, विहँस करो मृदुबानी । क्यों सकुचति होरी के अवसरि, ऐरी सुघर सयानी ॥ विनय० ॥ कञ्चनकुँअरि प्रान प्रीतम पर, विनही मोल विकानी । भूलिगई सब लाज लोक की, सूझति लाभ न हानी ॥ विनय मोरी ० ॥ १२१ ॥

होली काफी।

छबीले दोऊ होरी के मतुवारे ॥
खेलत फाग प्रमोद विपिन में भूषण बसन सम्हारे ॥ छबीले० ॥ छूटत मूँठ गुलाल कुमकुमा, केशर रङ्ग फुहारे ॥ छबीले० ॥ मधुर सुराग अलापति अलिगन, बाजें ताल सितारे ॥ छबीले० ॥ कञ्चनकुँअरि अनूप रूप छबि, छाई द्रुगन हमारे ॥ छबीले० ॥ १२२ ॥

होली काफी।

छबीले दोऊ खेल रहे आज होरी ॥
इत अवधेश कुँअर मदमाते, अनुज सखन सँग जोरी। उत सज साज समाज सखिन जुत, श्रीमिथिलेश किशोरी ॥ छवी० ॥ उमग उमग दोऊ होरी खेलत, अति आनन्द मचोरी। अतर अबीर अरगजा छिरकति, केशर के रँग घोरी ॥ छबी० ॥ कञ्चनकुँअरि हरषि छबि निरखति, डारति तृण महि टोरी। आरति करति बलैयां लेवै, बाढ़ी प्रीति न थोरी ॥ छबीले० ॥ १२३ ॥

होली काफी।

गुँइयांरी मैं तो खेलन न जाऊँ ऐसी होरी ॥
जो मैं घरसे बाहर निकसोंगी, तौ रँग में करै सरबोरी ॥ गुँइयां०
विपिन प्रमोद में मिले अचानक, नव नागर चित चोरी ॥ गुँइयां०
ना मैं बोली ना मैं चाली, बहियां पकरि झकझोरी ॥ गुँइयां० ॥

रङ्ग-गुलाल सबी मोपै डारो, सो पूरी करी गति मोरी ॥गुँइयां०॥ कञ्चन कुँअरि न मानत बरजी, गह मोतिन लर तोरी ॥गुँइयां॥१२४

होली काफी।

दरस मोहि क्यों न देत बिहारी ॥
हा हा करति हौं पैयां परति हौं, सुनिऐ अरज हमारी ॥दरस०॥ गिनत गिनत तारा गण नभ के, बीत गई रैन सारी॥ दरस०॥ विन देखें पिय कल न परत है, वह छबि की बलिहारी॥दरस०॥ कञ्चन कुँअरि कृपा अब कीजे, लीन्हो शरण तुम्हारी॥दरस०॥१२५

रसिया।

चले आवैं छैल अवध बसिया ॥
अनुज सखा सब सङ्ग लियेहैं, धूम मचावत आवैं छलिया॥
कर कमलन पिचकारी सोहति, तकि तकि मारत बीच हिया॥
जित रुख परति उतई को धावत, ऐसी तकन तकत रसिया॥
उड़त गुलाल लाल रंग भीने, झीने पट तन दुति लसिया॥
कञ्चन कुँअरि निरखि छबि बांकी, तन मन धन सब वार दिया॥ चले आवैं ॥ १२६ ॥

रसिया।

नव नागर वाल बनो रसिया ॥
दृग खंजन अंजन कजरारे, तकन तीर बांकी गसिया॥ वेंदी भाल विशाल बिराजे, नथ बेसर लटकन लसिया॥ कञ्चन

कुँअरि श्याम तन सारी, घूंघट पट मुँख छबि शशिया ॥१२७

रसिया।

बांके दोउ नयन बिहारी के ॥
कसकत भौंह कमान बान हिय, मानो जखम कटारी के ॥ दृष्टि परत घाइल कर डारत, जैसे वार शिकारी के ॥ कञ्चनकुँअरि फिरत चंचल चख, छाके मद मतवारीके ॥ १२८ ॥

रसिया।

सिय बरसे नैन लगे जबसे ॥
खान पान सन मान ज्ञान बुधि, तन मन सुधि न रही तब से॥ गुरु जन लाज समाज साज बिच, बहुर मिलौं कैसे ढब से ॥ आदत जिय कुल कान आन डर, तोड़ देउँ नाता सब से ॥ लाख कहै कोउ मैं न डरुँगो, यह हिय धार लई अब सें ॥ कञ्चन कुअरि जुड़ावहु पिय हिय, विरहा अनल दही कब से ॥ १२९॥

रसिया ।

निरमोही यार राम रसिया ॥
करत नशंक अंक भर भेंटत, औचक छैक रहे गलिया। गहि झटकै अंचल चंचल अति नहिं मानी हटकी हटिया ॥ हौं डरपत अति लाजकी मारी, पुरजन देख करें हँसिया। कञ्चन कुँअरि बिनय कर हारी, निपट निठुर अलि सिया को पिया ॥१३०

रसिया ।

मत रोको छैल गैल मेरी ॥
रघुनन्दन तुम राजकुँअर हो, हम सहचरि प्रिय सिय केरी । जाय कहूंगी नहीं डरूँगी. कबलौं सहूँगी बहु तेरी ॥ रँग बरसावत नैन लड़ावत, प्रेम सलिल हिय भीजे री । कञ्चन कुँअरि रसिक रस चसके, छलकर छतियां छूए मेरी ॥ १३१ ॥

रसिया ।

रसिया को पकर भिजव गोरी ॥
मुखमलि रोरी मोरी बहियां मरोरी, ऐसी करी मोसे बरजोरी । घालत मूंठ गुलाल कुमकुमा, केशर रंग में पकर बोरी ॥ जो गह पाऊं सखि वह छलिया, दिलभर आज खिलाऊं होरी । कञ्चन कुँअरि नवल नवलाकर, सियपट लौं अटकावौं री ॥ १३२ ॥

रसिया ।

रघुबँसी यार नवल रसिया ॥
हाँस करत चूनर मोरी झटकति, रोकत छैल अवधबसिया । पकर भिजोवत रँग में डुबोवत, झकझोरत मेरो डरपे जिया ॥ गैल चलत रोकत गरबीलो, जांऊगी न मैं ऐसी गलिया । कञ्चन कुंअरि करौं का सजनी, उरझि रहो द्दग सामलिया ॥ १३३ ॥

रसिया ।

होरी खेलनें चलहु नवल रसिया ॥
अनुजसखन युत बैठे हँस हेरति, तिहि छिन कर गहि बोली सखिया ।

उठहु छैल अब महल सिधारौ, क्यों इति आयके छिपे पिया ॥ सुन प्रिय बचन ललक उठ लालन, आवत पुनि सकुचात हिया। कञ्चन कुँअरि सखी समुझावत, आयुस सियजू हरष दिया ॥ १३४ ॥

रसिया।

होरी खेलत आवै अवध रसियो ॥
हाँथ लिये कंचन पिचकारी, अबीर गुलाल भरे झोरिया। अनुज सखा सब सँग लिये हैं, हो हो करत छैल छलिया ॥ केशर रँग अरगजा लैके, अलिन सहित सुन चली सिया। कञ्चन कुँअरि परस्पर खेलें, ए दोऊ मोमन बसिया ॥ १३५ ॥

रसिया।

रसिया की हँसन लगै प्यारी ॥
श्यामली सूरति माधुरी मूरति, कोटिन शशि मुख बलिहारी। क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, अतर भरी जुलफैं कारी ॥ मृदु मुसक्याय हरैं मन मेरो, वंकसैन दृग कजरारी। यह छबि उपमा एक न आवति, खोजि खोजि मम मतिहारी ॥ कञ्चन कुँअरि खेलतीं होरी पिय सँग रंग रस मतुवारी ॥ १३६ ॥

रसिया।

होरी खेलत रसिया सिया प्यारी ॥
रंग अबीर लिये भर झोरिन, कर कञ्चन की पिचकारी। उड़त

गुलाल फुहारे छूटत, महलन धूम मची भारी॥ सुनि सब नवल बाल जुरि आई, भीजत कोउ न बची नारी। स्वामिन सैन दई सखियन को, पकरो री मिलि छलिवारी॥ चपल अली पिय गहि कर ल्याई। नवदुलहिनि करि बैठारी। कञ्चन कुँअरि गांठ जोरी तब, दोउन मुख लखि बलिहारी॥ १३७॥

रसिया।

रघुनन्दन रसिया लगै प्यारौ॥
बिन देखे मोहिं कल न परत है, राजकुँअर रस मतुवारौ। हँस हेरति दृग सैन चलावति, चितवनि घाइल करिडारौ॥ कञ्चन कुँअरि हमैं मन भावै, लखि छबि तनमन बलिहारौ॥ १३८॥

रसिया।

रसिया तेरीं जुलफैं अजब कारीं॥
भाल बिशाल तिलक केशरको, नासामणि मोमन हारीं। भौंह कमान मैनमद गंजन, अञ्जनयुत अँखियाँ प्यारीं॥ भरि भरि मूठ गुलाल उड़ावति, हिय मारै तक पिचकारीं। कञ्चन कुँअरि न मानति वरजी, बिनती करि करि हम हारीं॥ १३९॥

रसिया।

रसिया तेरे नैन बड़े जाली॥
चितवनि में चित चोरि लेत हैं, मोहनिया हमपर डाली। सानदार

नोंकीले नवरस, पान किये मद मतुआली ॥ माथे तिलक गुलाल गालपर, अधरन लसैं पान लाली ॥ श्यामल बदन मदन मनमोहैं, चाल चलति है मतवाली ॥ कञ्चन कुंअरि छैल छतियाके, फैल कहों कहँ लग आली ॥ १४० ॥

रसिया ।

रसिया केहि देश छिपे जाके ॥
जनक नगर की नव वालनपर, औचक आन परे डाके । नृपकिशोर चितचोर शिकारी, मार गये दृग सर आके ॥ कञ्चन कुँअरि भई घाइल हिय, जाय कहें कोइ समुझाके ॥ १४१ ॥

रसिया ।

वरजी नहिं मानें छैल रसिया ॥
हों हारी हाहा कर करकें, निपट हटी अलि सियाको पिया । अबिर गुलाल सबइ मोपै डारो, केशर रँग में बोर दिया ॥ कञ्चनकुँअरि करो मनभाई, अबहूं डरपत मोर जिया ॥ १४२ ॥

रसिया ।

रसिया मोसे कहत नवल गोरी, मैं तो खेलों न वाके सँग अब होरी । बहियाँ पकर घूंघट पट खोलत, मलत कमल मुख गह रोरी ॥ रसिया० ॥ भर पिचकारिन सनमुख मारति, भई चुनर रँग सर बोरी । अनुज सखन मिलि धूम मचावति, जानति नहिं कछु हौं भोरी ॥ रसिया० ॥ कञ्चन कुँअरि करत मनभाई भरत अंक में

बरजोरी ॥ रसिया० ॥ १४३ ॥

रसिया।

मेरी छैंको न गैल छैल रसिया ॥
मदमाते छाके होरीके राजकुमार अवध बसिया ॥ मेरी० ॥ सँग की सखियाँ दूर निकस गई, हों जो अकेली डरपे जिया॥ मेरी० ॥ सास नँनद कहुं जो सुन पैहैं गारीं दैहैं प्रान पिया ॥ मेरी० ॥ कञ्चन कुँअरि कौशला वारे, तनमन तुमपर वार दिया॥१४४ ॥

रसिया।

रघुबर को नार बना ल्याई ॥
काहू ने बेंदी काहू ने बेसर काहू ने चूरीं पहिराईं । काहू ने लँहगा काहू ने सारी काहू ने अंगिया अँजवाई । काहू ने जावक काहू ने मेंहदी काहू ने बीरीं रचवाई । बने छबीली नवल दुलैया सिय स्वामिन ढिग पधराई ॥ कञ्चन कुंअरि कमलकर दरपन दै दोहुन छवि दरसाई ॥ १४५ ॥

रसिया ।

मन भायौ फगुवा लैहौं हों ॥
दीजे लाल लखन फगुवा में जान तुम्हें जबही दैहौं ॥ मन भायो० ॥ जो नहिं देत कहौं सांचीकर कौशिल्या ढिंग लैजैहौं ॥ मनभायो ॥ कञ्चन कुँअरि कह्यो हँस प्रीतम प्रिया हजूरी में रैहौं ॥ मनभायौ फगुवा लैहौं हों॥ १४६ ॥

रसिया ।

भागे क्यों जात कहो प्यारे ॥
कहत रहे हम बड़े खिलारी, सो क्यों आज ललन हारे । ठाढ़े रहो ठाढ़े रहो रसिया, हँसि हैं संग सखा सारे ॥ कञ्चन कुँअरि पकर सखियन ने बरबस सिय ढिग बैठारे ॥ १४७ ॥

फाग ।

दोउ राजकुमार चले आवैं । अलबेले रसिया मनभावैं ॥ दोउ० ॥ भाल बिशाल तिलक केशरके, कुण्डल कानन झलकावैं ॥ दोउ० ॥ मोतियन माल मुकुट को लटकन धनुषबान कर छवि छावैं ॥ दोउ ॥ गोल कपोलन अलकें प्यारी, कारी कारी लहरावैं ॥ दोउ० ॥ कञ्चन कुँअरि सैन नैनंनकी, तिरछीकर घाले जावैं ॥ दोउ० ॥ १४८ ॥

फाग ।

बनौं राजकुँअर चित चोरी को, नागर नवल किशोरी कौ । बनौं दृग कञ्जन अञ्जन रञ्जन मन, बसीकरन तब गोरी कौ ॥ बनौं० ॥ पिचकारिन रँग दँग करडारति, कुमकुम मारति रोरी कौ ॥ बनौं० ॥ भरि भरि अंक मयंक मुखिनि को, फैल करत बरजोरीकौ ॥ बनौं० ॥ कञ्चन कुँअरि कहो नहिं मानति, मतवारौ रँग होरीकौ ॥ बनौं ॥ १४९

फाग ।

होरी खेलें अवधकी अलियन में । केलि कुञ्ज रस थलियनमें । ॥ होरी० ॥ उड़त गुलाल अबीर गगन लौं, लली लाल रँग रलि-

यन में ॥ होरी० ॥ पिचकारिनि हन सनमुख मारति, डारति डांके गलियन में ॥ होरी० ॥ कञ्चन कुँअरि आज मैं फँसगई, छैल छबीले छलियन में ॥ होरी० ॥ हाहा करि हारी मैं उनसे, जुलम जोर जंजलियन में ॥ होरी ॥ १५० ॥

फाग ।

फगुवा रघुनंदन सें लैंहौं, कौशलपुर जाने ना दैंहौं ॥ मचली प्रिय सिय की इक आली, दाव पहिल मैं चुकवैंहों ॥ फ० विजय पत्र इनसे लिखवाकर, जुरमाने लछिमन लैंहौं ॥ फगु० ॥ कै कर देव सहो सिया सनमुख, मिथिला पुर तज ना जैंहों ॥फ० कञ्चन कुँअरि विहँस प्रभु बोले, दास तुम्हारौ हो रैंहों ॥१५१॥

फाग ।

जीवन प्रान हमारे, सजनी कँह गये राजदुलारे लाल ॥ वा मन हरन माधुरी मूरति, नैनन बसो हमारे ॥ सजनी० ॥ विन देखे मेरौ जिया अकुलावै, कौन मंत्र पढ़ डारे ॥सजनी०॥ कञ्चन कुँअरि फिरति व्याकुल भइ,, कब मिलहैं पिया प्यारे॥स० ॥१५२॥

फाग ।

नृपति छैल छल वारी, मोइपै विहसि मोहनियां डारी॥ लाल ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन, चितवनिमें बलिहारी ॥ मोइपै०॥ जबसे दृष्टि परे रघुनन्दन, तन मन सुरति विसारी ॥ मोइपै ० ॥ तलफति रहति रैन दिन जैसे, विकल मीन बिन वारी ॥ मोइपै० ॥

कञ्चनकुँअरि कृपाल कृपा करौ, हौं तौ नाथ तुम्हारी ॥मो० १५३॥

फाग।

जे नैना हठीले ना मानें, हठ राम रसिक सें उरझानें ॥जे०॥ रस बस मधुप जाइ इम बोधे, रूप माधुरी ललचानें ॥जे०॥ सुरझायें सुरझें नहिं सजनी, फिर पीछें कस पछतानें ॥जे०॥ कञ्चनकुँअरि लगन की चोटें, जेहि लागैं सोई जानें ॥जे० १५४॥

फाग।

रसिया रँग भर भर ना डारौ, पिचकारी द्रगन तक ना मारौ। ना गहौ छैल गैल बिच बहियां, पैंयां परौं मैं बलिहारौ ॥रसिया॥ राजकुँअर तुम मद रस छाके, मोंहि लगै जिया डर भारौ ॥रसि॥ सास नँनद सुर्नि अति इतरैहैं, रूठि रहैं सुनि पिया प्यारौ ॥रसि॥ कञ्चनकुँअरि शरणमें तुम्हरी, चरणकमलसे ना टारो ॥रसि० १५५॥

फाग।

अवध छैल मतवारे मोइ को नैन बान तकि मारे लाल ॥ हौं सरजू जल भरन जात ती, औचक आज निहारे ॥मो०। जबसे लखी श्यामली सूरति, भूल गये सुख सारे॥ मोइ०॥बिरह बिथा व्याकुल भइ सजनी, को अब मोहि उबारे ॥ मोइको० ॥ तनक हेरि द्रग कोर कटीली, जादू से पढ़ डारे ॥ मोइको०॥ कञ्चन कुँअरि राम रसिया से, नेहा लगे है हमारे ॥ मोइको० ॥ १५६ ॥

फाग ।

तुम नैन सैन जिन घालौ पिया। कसकैगी हमारे बीच हिया ॥
इन नैननकी सैन कटीली, रहि रहि साले मेरे जिया ॥ तुम नैन०॥
अवध छैल दिलदार बेदरदी, मानो बरजी प्रानप्रिया ॥तुम नैन०॥
कञ्चन कुँअरि चरन की चेरी, तन मन तुमपर वार दिया ॥ तुम
नैन० ॥ १५७ ॥

फाग ।

वेदरदी छैल हमारे हैं। नृप नन्दन राजदुलारे हैं ॥
नेह लगाय छिपे कित जाकर, दोउ नैननके तारे हैं ॥ वे० ॥ रूप
छटा दरशाय माधुरी, जादू से पढ़ डारे है ॥ वे० ॥ कञ्चनकुँ-
अरि बसे मनमोहन, बिसरत नाहिं बिसारे हैं ॥ वे० ॥ १५८ ॥

फाग कहरवा ।

सरजू के तीर, राजकुँअर खेलें होरी ॥
सखिन सहित इत जनक दुलारी, अनुज सखन युत उत रघुवीर ॥
राज० ॥ भरि अनुराग फाग सब गावति,बाजै डफ, मृदङ्ग मजीर॥
राज०॥ केशर रंग भरे पिचकारी, तक तक मारे मूठ अबीर ॥राज०
कञ्चन कुँअरि हमन मन छीनो रसिक रमन, लछिमन के बीर ॥
राज० ॥ १५८ ॥

फाग कहरवा ।

पनियाँ कैसे जांउ रसिया रोकै डगरिया में ॥
घूंघट ओट चोट तक मारै, काँकर घालै गगरिया में ॥पनियां॥

केशर रंग अबीर अरगजा, भरि भरि डारै चुनरिया में ॥पनिया॥
भीजे रंग अंग झीने पट, मन ललचात नजरिया में ॥पनियां॥
लख यह हाल हँसें नर नारी, देकर ताल बजरिया में ॥पनियां॥
कञ्चनकुँअरि करी बदनामी, नाहक अवध नगरिया में ॥प० १६०॥

फाग।

अवध छैल मतवारौ, हमपै लाल गुलाल न डारौ लाल ॥
बरजोरी न करौ रघुनन्दन, छोड़ो जि हाथ हमारौ ॥ हम० ॥
झक झोरौना मुरक जाय बैंया, छूट जाय कच वारौ ॥ हम० ॥
कञ्चन कुँअरि कहत कर जोरे, अबकी नाथ उबारौ ॥हम०॥१६१

फाग।

बन प्रमोद की खोरी मोरी, भई आज चित्त चोरी लाल ॥
गई रही मैं फूल चुननको, पठई जनक किशोरी ॥ मोरी०॥ खेलत फाग मिले रघुनन्दन, संग सखन की जोरी ॥ मोरी० ॥ हो हो करति गुलाल उड़ावति, भरें अबीरन झोरी ॥ मोरी ॥ पर बस परी घेर लइ चहुँ दिशि, केशर के रंग बोरी ॥मोरी॥ भर अंकम वर जोरी मोरी, मोतिन की लर तोरी ॥ मोरी० ॥ मन भाई रघुराज आज सखि, गति कीन्ही नहिं थोरी ॥ मोरी० ॥ कञ्चनकुँअरि छीन चित लीन्हों, बरबस नैनन कोरी ॥ मोरी० ॥ १६२ ॥

फाग।

अवध पुरी कीं नारीं, आई जनक लली ढिग सारी लाल ॥
करी पुकार सरन महरानी, राखौ लाज हमारी ॥आई०॥ खेलतफाग

आज रघुनन्दन, भर उमंग अति भारी ॥ आई० ॥ हाट बजार गलिन बीथिन में, बरसत रंग अगारी ॥ आई० ॥ बाजत झांझ सितार मजीरा, डफ मृदंग करतारी ॥ आई० ॥ करत बिहाल ख्यालही लालन, मूठ गुलालन मारी ॥ आई० ॥ सनन सनन धुन होत गगन लौं, छूटत जब पिचकारी ॥ आई० ॥ चलैं न एक उपाय हमारौ, हम सब उनसे हारो ॥ आई० ॥ कञ्चन कुँअरि चलौं संग स्वामिन, तौ जय होय हमारी ॥ आई० ॥ १६२ ॥

फाग ।

अवध छैल से होरी, खेलन आई राजकिशोरी लाल ॥ भूषन बसन सजे सब कामिनि, कोई श्यामल कोइ गोरी ॥ खेलन० ॥ जनक लली की सखी छबीली, नवल वैस मन भोरी ॥ खेलन० ॥ केशर रंग भरे पिचकारिन, लिए गुलालन झोरी ॥ खेलन० ॥ सैंन दई मिथिलेस किशोरी, झुंड झुंड उठ दौरी ॥ खेलन० ॥ सखिन कहो ललकार, लाल से, समर खेलिए होरी ॥ मत समझौ लंका पति रावन, कपि बल जीत लियौरी ॥ खेलत० श्री राजा धिराज मिथिलापति, तिनकी कुँअरि किशोरी ॥ खे० ॥ यहाँ न जय पावहु जू लालन कर कर यतन करोरी ॥ खेल० ॥ जो रघुराज भली निज चाहौ सीख मानिये मोरी ॥ खेल० ॥ कञ्चनकुँअरि सिया स्वामिनि सें विनय करौं कर जोरी ॥ खेलन० ॥ १६३ ॥

फाग ।

अवध छैल से होरी खेलन आई राजकिशोरी लाल ॥

गजल ।

आज राम निवास में होरी रँगीली होरही।
जानकी रघुबीरकी झांकी छबीली होरही॥
उत लड़ैते लालके करकञ्ज पिचकारी लसै।
इत अबीर गुलाल की भरमार पूरी होरही॥
रंग केशर की मची है कीच गुलशन में सखी।
घल रहे हैं कुमकुमा घमसान होरी होरही॥
बाजते डफ ढोल ताल मृदंग तान तरंग से।
कानदै आली सुनों क्या गान होरी होरही॥
छकरही कञ्चनकुँअरि लख युगलछबि मनमोहनी।
प्रान तन धन वारके चरनों की चेरी होरही॥१६४॥

फाग ।

सुनि सखी बचन अति मन भाये, हँस लाल लली सनमुख आये॥ दोउकर जोर भये ढिग ठाढ़े, निरखि सिया छवि हरषाये॥ हँस०॥ कहत लाल निज प्रान प्रिया से हम हमेस हारति आये॥ हँस॥ सुनि प्रिय बचन पान गह प्यारी, प्रिय प्रयंक पर बैठाये॥ हँस॥ कञ्चन कुँअरि जुगल छबि निरखति प्रमुदित लोचन फल पाये॥ हँस॥१६५

फाग।

मोहि रोको न लाल छैल छलिया। नृपति किशोर रंग रलिया॥ विपिन प्रमोद सघनकुञ्जन में बैठे रहत रोकें गलिया॥

॥मोहि०॥ बरजोरी वरजो नहि मानत, मुख मञ्जुलि रोरी मलिया ॥मोहि०॥ कञ्चन कुँअरि लाल रस माते, लपटि रहे मो उर थलिया ॥मोहि० । १६६ ।

कहरवा फाग

नेक समर रहौ बड़े खिलारी होरी के ॥
कहैं सखी ललकार सियाजु की,भागौ ना लालन ठाढ़े रहौ॥ब०॥ अब क्यों सनमुख आवो न प्यारे, काहे सखन कौ पीछौ गहौ ॥ बड़े० ॥ जो करतूत होय नहि रौरे, हारे हम श्रीमुख से कहौ ॥ बड़े० ॥ कञ्चनकुँअरि हँसी सिय स्वामिनि, हारे पियजू मौज लहौ ॥ बड़े०॥ १६७ ॥

तथा ।

दोउ खेलें फाग, रघुनन्दन मिथिलेश लली ॥
बंधु सखा उत अवध छैल सँग, इत मिथिला की बांकी नारि सिया प्यारी की चपल अली ॥ उत सें चलें अबीर कुमकुमा, इत सें पिचकारिन की मार, खूब मची है रंग रली ॥ होरी गावैं ताल बजावैं, भर भर मेलें मूठ गुलाल, तक तक अपनी दांव भली ॥ कञ्चनकुँअरि नजर जित जावै, बरसत देखौ रंग अपार, अवध नगर की गली गली ॥ १६८ ॥

फाग ।

छबि पर फिरत दिवानी । श्यामल मूरति हृदय समानी लाल ॥ बिपिन प्रमोद मिले सखि औचक, बिहरत छैल गुमानी

॥श्याम०॥ विहँस कहो तुम कौन सुन्दरी, काकी नार सयानी ॥श्याम०॥ हौं कछु कह न सकी अलि उनसें, लोक लाज उरझानी ॥ श्याम० ॥ चितवत चले गये मनमोहन, फिर कछु कही न बानी ॥ श्याम० ॥ प्रेम भाव सैंनन में कर गये, उर अन्तर की जानी ॥ श्याम० ॥ तबही सें व्याकुल भइ डोलत, अधिक पीर सरसानी ॥ श्याम० ॥ कञ्चनकुँअरि हिये में सालत, नैंन सैन लासानी ॥ श्याम० १६९ ॥

फाग ।

अवधेश किशोर रची होरी । मिथिलापुर की सब गोरी ॥ नव ससुरार नवल नव नेही, नवनागर नवला गोरी ॥ अव० ॥ सिद्धि कुँअरि सरहज सखियन लै, रंग गुलाल भरे झोरी ॥अव०॥ कर छल झपट गहे रघुनन्दन, गोल कपोलन मल रोरी ॥अव०॥ कञ्चनकुँअरि करी मनभाई, पीताम्बर लीनों छोरी ॥अव० १७० ॥

फाग ।

रघुवंशीराज किशोरी कौ। रसनागर नव गोरी कौ ॥
तिरछी चितवति सैंन चलावति हँस हेरति चित चोरी कौ ॥
हा हा कर हारी नहिं मानति, फैल करति बरजोरी कौ॥ कञ्चन कुँअरि रसिक रस मातौ रँग छाको नई होरी कौ॥ १७१ ॥

फाग ।

अबतो फागुन मास लगो री, हिल मिल खेलौ होरी। सुनों सुनों दै कान ढोल डफ, बीथिन बंजन लगो री ॥ अवध छैल

सखी गैल खड़ें हैं, भरें अबीरन झोरी ॥ लै लै नाम पुकारत हम कों, सज सज बेग चलौरो ॥ कञ्चनकुँअरि खोल दिल खेलौ, फाग सुहाग मिलो री ॥ १७२ ॥

फाग ।

द्वारें खड़ो छैल मतुवारो । गोरी दै लै झपट किवारौ ॥ जो घुस पैहै पौंर हठीलो, चलै न एको चारौ ॥ मनभाई कर लै है अपनी कर कर बदन उघारो ॥ अवध छैल दिलदार यार कौ बाजत जीत नगारौ ॥ मिथलापुर की नवल नारि सब मानों कहो हमारो ॥ कञ्चनकुँअरि नही फिर हू है जग बदनाम तुमारौ॥१७३

फाग ।

अवध छैल मतवारो, देखौ होरी खेलत आवै लाल ॥
अनुज सखा सब साथ लिये हैं, गलियन धूम मचावै ॥देखौ० ॥
कर कमलन पिचकारी घालत, लाल गुलाल उड़ावै ॥ देखौ० ॥
केशर कीच मची गलियन में, निकस अली नहिं पावै ॥ देखौ० ॥
कञ्चनकुँअरि यही छबि देखति, राजकुँअर मनभावै॥ १७४ ॥

गजल ।

मची है आज रंग होरी प्रिया प्रीतम से मन्दिर में ।
नवल दोउ चाव से खेलैं भरे हैं रंग झोरिन में ॥
चलै पिचकारियां सनसन मची है कीच केशर की ।
बरसते कुमकुमा देखौ हुई क्या भीर मन्दिर में ॥

चपल रघुराज ने झटपट मिया को छलसे जा छेंका।
सखी सब रह गईं ठाढ़ीं भरी प्यारी को अंकम में॥
छूटकर लाड़िली जल्दी मली मुंख लालके रोरी।
उड़ाई सीसपर सारी दिया सुरमा है नैनन में॥
कहें कञ्चन कुँअरि हँस हँस अली सखियनसे इन कोंरी।
मिलावौ कौशलाजी से चलौ लैकर के महलन में॥ १७५॥

लेद।

कौशिल्या के नोखे लाल गलिन में, छेड़ौना हमको मानलो॥ जो तुम मानोगे नहीं, है खैर न अपनी जानलो। अँखियन में मेरी ना भरौ, भर मूंठ अबीर की डालतो॥ जनक लड़ैती लाड़ले पिचकारी दूर से घालतो॥ १७६॥

लेद।

रघुनन्दन राजकिशोर अवध में धूम मचावत श्यामरे॥ अरे हां हो छबीले सखन सहित ना कौ गहें, मग निकस न पावें बामरे। अरे हां हो दुलारे दुआरे हमारे आयके, लैलैकें पुकारें नामरे॥ अरे हांहो रंगीले कढ़त लखों लज्जालगे, घर रहत बनें ना रामरे। अरेहां हो रसीले जनक लड़ैती खेलिहों चाहै नाम धरैं सब गाम रे॥ १७७॥

लेद।

नवनागर राजकिशोर सखीरी मोपै, बरजोरी रंग डारोरी।

बन प्रमोदकी कुंज में रोकै ढ़ाठो गैल सिया प्यारौ री । मोहिभर पिचकारी घालीरी, मेरो भीज गयो तन सारौ री ॥ कञ्चनकुँअरि मानैं नहीं, बरजी हो छैल मतवारौ री ॥ १७८ ॥

लेद।

छलिया नृप अवध किशोर सखीरी, चितवनि में मनमो लियो। अरी हांरी सखीरी मैं सरजू जल जातती, श्रीबनप्रमोद की खोर अचानक आ मारगमें घेरियो ॥अरी॰ हँस घूंघट पट खोलकैं मुख मलो अबीर गुलाल झटक अंचल चंचल झकझेलियो ॥ अरी हांरी सखीरी कञ्चनकुंअरि निहारिकै, यह रूप भई बेहाल प्रेम के जाल गरे में गेरियो ॥ अरी॰ ॥ १७९ ॥

लेद ।

श्रीराम लखन दोउ बीर सखीरी, बिहरत सरजू तीररी ॥ अरी हांरी सखीरी जुलफैं गुलालन सोंभरीं, रंग भीजे हैं सिर मंदीररी ॥ अरी॰ ॥ पिचकारी तकि मारहीं, भर घालत मूंठ अबीर री ॥ अरी॰ ॥ कञ्चनकुंअरि बचै नहीं, जो जाय भरनको नीररी ॥ अरी॰ ॥ १८० ॥

लेद ।

जनि निकसौ अवधकी खोर, कुँअर दोउ ठाढ़े रोकैं गैलरी अरी हांरी सखीरी श्याम गौर मन भावनें, रस माते रंगीले छैलरी ॥ कुँअर दोउ ॥ अरी हांरी सखीरी सरजू तट नवकुञ्जन में होरी खेलैं मचावैं फैलरी ॥ अरी॰ ॥ करकमलन पिचकारियां,

झोरी में भरे गुलालरी ॥ अरी० ॥ डफ मृदंग धुनि होरही, सुनधाईं नवेली बालरी ॥ अरी० ॥ एक दिशि श्रीमिथिलेशजा, इक ओर छबीले लालरी ॥ अरी हांरी जनक लड़ैती रंग में, छबि देख भई बेहालरी अरी० ॥ १८१ ॥

इति होली रहस्य सम्पूर्ण।

अथ ग्रीषमऋतु का बिहार।

गजल ।

हैं अजब खसखस के बँगले, क्या नई आई बहार॥

देखिये ग्रीषम में प्रीतम सँग, प्रिया लूटैं बहार। मोतिया गुलआब के चहुंओर क्या छूटैं फुहार ॥ सेज फूलन की चुनी, बेला जुही चंपा अनार। पानड़ी रस केवरेकी, खुशनुमा खुशबू अपार॥ मस्त हो गुञ्जारकर, अलि अलिनि मिलि झूमें हजार । राजही तहां लली लालन साजही फूलन सिंगार ॥ झिल रहीं पंखा अलीं सीतल मधुर धीमी बयार। गौर श्यामल सोहनी झांकी छबीली बेशुमार ॥ देखकर कञ्चन कुँअरि तनमन वो धन करतीं निसार ॥

गजल ।

खसके बँगले में बिराजे आज सरजू तीररी ॥

लाड़िली निमिराजकी, दसस्यन्द सुत रघुबीररी । इत छबीली छटा सुन्दर, गौर श्याम शरीररी ॥ उत लहर उलही किनारे मञ्जु सरजू नीररी । इत मधुर धुनि होत नूपुर नवलपग मंजीररी ॥ उत छिनहीं छिन मदन कलरव भँवर अति गंभीररी । इत उड़त

पटपीत अंचलवर विभूषन चीररी ॥ चलरही कञ्चन कुँअरि उत्त सुखद त्रिबिधि समीररी ॥ १८३ ॥

इति ग्रीषमऋतु वर्णन ।

अथ वर्षाऋतु का विहार झूलन इत्यादि के पद ।

पद ।

देखौ सखी आज श्याम छबि छाई ॥
वनप्रमोद बिच घलो हिंडोरा झूलत सिया रघुराई । हरिहरि भूमि ललित सुख कारी, सघन बेलि द्रुम लता सुहाई ॥ चहुंदिशि फूलरही फुलवारी, महकत सरस मधुप मनभाई । रिमझिम रिमझिम मेहा बरसत, परत फुहार पवन पुरवाई ॥ भीजत सिय कंपत हिय पिय हँस, पीताम्बर पट लेत उड़ाई । झूलत जुगल झुलावति सखियां, राग मलार मधुर धुनि गाई ॥ कञ्चन कुँअरि निरखि यह शोभा, तन मन धन वारति बलिजाई ॥ १८४ ॥

पद ।

झोका दीजे सम्हार पिया प्यारे ॥
सुकुमारी मिथिलेश नन्दनी, तुमहूं जानत राजदुलारे । झोका० ॥
नृपत किशोर तरस नहिं आवत, नोखे झूलनहार मतवारे । झो० ।
मानो अरज गरज यह हमरी, करतीं बार बार बलिहारे । झो० ।
कञ्चनकुँअरि बिनय सुनि झूलत, मंद मंद गलबहियां डारे ॥ झोका दीजे सम्हार० ॥ १८५ ॥

भजन।

जान परी पावस ऋतु आई ।
बागन मोर कोकिला बोलत, चातक दादुर शोर मचाई। उमड़ि घुमड़ि गरजत घन तरजत, काली घटा नभ देत दिखाई ॥ रिमझिम रिमझिम बरसत बदरा, हरि हरि भूमि लता झुकआई। सरजू तीर प्रमोद कुंज में, हिलमिल झूलें सिया रघुराई। जनक लड़ैती जुगल छबि निरखति प्रेममगन सुधि बुधि बिसराई॥१८६॥

मलार ।

चलौ पिया प्यारी झूलन ऋतु आई॥
घन घुमड़त दामिनि दुति चमकत परत फुहार मंजु मनभाई। तरल तरंग झकोरत सरजू त्रिविधि समीर बहत पुरवाई॥ विविध भांति फूली फुलवारी, झुकरही लता भूमि छवि छाई। बन प्रमोद में घलो हिंडोरा, सरजू तट सुन्दर सुखदाई॥ दादुर कीर पपीहा बोलत, नचत मोर मन मोद बड़ाई। जनक लड़ैती फुलन हित आतुर, बिनवति वार बार बलिजाई॥ १८७॥

पावस ।

देखौ सखी सावन मनभावन॥
नील जलद नभ छाय रहेरी, परत फुहार मंद सुख छावन । बरन बरन द्रुम बेलि लता छवि, खिले पुष्प मन मैन बढ़ावन॥ नाचत मोर पपीहा आली, बोलत बचन मनोहर पावन । हरि हरि भूमि

सुखद सरजू तट, हरि हरि कुंज रंग बरसावन ॥ हरित मनिनमय लसत हिंडोरा, हरे हरे भूषन बसन सुहावन। जनक लड़ैती हरित तनमन भयो निरख जुगत आनँद उपजावन ॥ १८८ ॥

पावस।

देखो सखी नइ पावस आई ॥
हरिहरि भूमि लता छबि सोहै, फूली नई नई फुलवाई। बोलत मोर चकोर कोकिला, मधुर मधुर सुर देत सुनाई ॥ प्रिया प्रीतम दोउ झूलत हिंडोला, शोभा अति छबि लागत सुहाई। कञ्चन कुँअरि अनूप छटा छबि, बसी हृगन मेरे सखि आई ॥ १८९ ॥

पावस।

चलो सखि देखिये अजब छबि छाई ॥
सरजू तीरें घलो हिंडोला, हिलिमिलि झूलत सिया रघुराई। मंद मंद मकरंद सुसीतल, त्रिविध समीर पवन पुरवाई ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत, समय सुहावन अति सुख पाई। कञ्चन कुँअरि सघन कुंजन बिच, झूलत अवध छैल हरषाई ॥ १९० ॥

पद।

देखो सखी झुकआई घटा कारी ॥
कोकिल मोर शोर अति कीनों, चातिक पिउ पिउ करत पुकारी। बदरा गरजत मेहा बरसति, लगत बूंद जनु मदन कटारी ॥ प्रग-

टत दुरित गगन बिच दामिनि, लख कंपत डरपत जिय भारी। सूनी सेज बिरह व्याकुल अति, करत मोहि सखी बिना बिहारी॥ कञ्चन कुँअरि कठिन पावस की, कहै कौन विधि निशि अँधियारी॥ १९१॥

मलार।

निरमोही राजदुलारे, सावन में अवध सिधारे॥
जबसे त्याग गये रघुनन्दन ब्याकुल प्रान हमारे। पड़त न चैन दरश बिन देखें, बहत नैन जल धारे॥ निशि अँधियारी कारी जिय डरपै बिरह ज्वाल तन जारे। अति तीखी नेहा की गांसी, कसकत हृदय हमारे॥ कञ्चन कुँअरि कृपाकर आतुर आय मिलो पिया प्यारे॥ १९२॥

झूला।

धीरें धीरें लाल मिलि झूलो॥
देहु न झोका रसिक रघुनन्दन, सिय सुकुमारी ललक लख फूलो। तुम्हें न पीर तनक तरुणीकी, जान परत जिय कठिन अतूलो॥ कंचन कुँअरि भए मनभावन, भामिन भय सबके अनुकूलो १९३

बिहाग।

जुगल दोउ झूलत रंग भरे॥
बन प्रमोद बिच सघन लतन में, हो मो दृष्टि परे। वो मनहरन अनोखी झांकी, रति पति मान हरे॥ जनक लड़ेती बसौ दृग

मेरे, टारेहु पल न टरे ॥ १९४ ॥

विहाग ।

पिया बिन मोजिय कछु न सुहावै ॥
निस दिन रहत दरश बिन ब्याकुल, नैनन नीर बहावै । मिलि बिछुरे रघुनन्दन जबसे बिरहा जोर जनावै ॥ जनक लड़ैती कहों अब कासो जो पिय आन मिलावै ॥ १९५ ॥

विहाग ।

बसे मेरे नैनन राजकिशोर ॥
विपिन प्रमोद की कुंज गलिन में, मिलि गयेरो चितचोर । श्याम बरन मनहरन छबोले, हँस हेरे मेरी ओर ॥ जबसें लखी मैंने माधुरी मूरति, नहिं लागत जिय मोर । कञ्चन कुँअरि प्रान जीवनधन फिर निकसौ यहि खोर ॥ १९६ ॥

पुर्वी ।

अजहूं पिया नहिं आये सजनी, सूनी सिजरिया हमारी रे । बादर गरजै बिजुरी चमकै, लागत बूंद कटारी रे ॥ एक तो बिरहा सतावै दूजै, डरपावै निशि कारी रे । राजकिशोर दरद नहिं जानें, हाय सुरतिया बिसारी रे ॥ बिलम बिदेश रहे मनमोहन, जाने काह चित धारी रे । काहू सौतनिया से नेह लगाये, कपटी छैल बिहारी रे ॥ सोई शूल हिये मोहि सालत, बिरहा बिथा भई भारीरे । कञ्चन कुंअरि कृपा अब कीजे, दासी मैं नाथ तुम्हरीरे १९७

विहाग ।

पिया बिन जागी सारी रात ॥
मनसिज तावत जिय घबड़ावत, मुंख सें न आवत बात । तलफ तलफ व्याकुल भइ सजनी, तारे गिनत प्रभात ॥ कञ्चन कुंअरि प्रान प्रीतम बिन, पल-छिन रहो न जात । वेग मिलहु रघुलाल रँगीले बिरह पीर सरसात ॥ १९८ ॥

विहाग ।

श्याम बिन मानत नाहिं जिया ॥
कल नहिं पावत कछु न सुहावत, आवत रात न निंदिया। उन बिन बिरह विथा भई आली, वे नहिं लेत खबरिया ॥ जनक लड़ैती पपीहा बोलत, सुन सुन फटत हिया ॥ १९९ ॥

देस मलार ।

पियाके दरश बिन जिया अकुलावै ॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदिया, नैनन नीर बहावै ॥ बिन रघुबीर विथा भई सजनी, बिरहा जोर जनावै ॥ बादर गरजै बिजुरी चमकै, लख लख जिया डरपावै ॥ कञ्चन कुँअरि श्याम निरमोही काहे को मोहि सतावै ॥ २०० ॥

मलार ।

सावन में मन भावन आयौ ॥
आज सखी सज मंगल साजौ, ए दिन मैं बड़भागिन पायौ । पहरौ

सुरँग चूनरी सारी, हरषित राग मलार सुगायौ ॥ जनक लड़ैती झूलन हित पिय सँग, कदमकुंज झूला डरवायौ ॥ २०१ ॥

मलार ।

मनभावन सावन सखि आयौ ॥
चंचल चपला चमकत चहुं दिशि, घन घमंड नभ मंडल छायौ । फूले फूल कुञ्ज हरियालो, मंजु लता मंडफ मनभायौ॥ तेहि तर रतन जड़ित झूलापर, झूलत जुगल रंग बरसायौ । कञ्चन कुँअरि झुलावति गावति निरखि निरखि लोचन फल पायौ ॥ २०२ ॥

बिहाग ।

सखीरी कहुं देखे अवधबिहारी ॥
क्रीट मुकुट पीताम्बर सोहैं, कुण्डल की छबि न्यारी । सुन्दर रूप मोहनी सूरति, कोट भान उजियारी ॥ वह हेरन मुसक्यान माधुरी चितसें टरत न टारी । जनक लड़ैतो नवल मनमोहन, बिहसि मोहनिया डारी ॥ २०३ ॥

विहाग ।

दरश मोहि दीजे अवधबिहारी ॥
अबकी बेर कृपा प्रभु कीजे, येही अरज हमारी । तुम बिन मो कँह कल न परत हैं, नागर नवल खिलारी ॥ दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, जैसे मीन बिन वारी । कञ्चन कुंअरि कृपाल कहाकर, काहे सुरति बिसारी ॥ २०४ ॥

पद ।

गर्ज गर्ज घनघोर घटा छाई। लागो सावन अति सुखदाई ॥ सरजूतट बिहरत मनभावन, निरखत सलिल तरंग सुहाई। बहत पवन अति जोर सोर से, बरसत बादरवा झरलाई ॥ द्रुमतरु नवल छबीले दोऊ, भींजत पातन बुंद बराई। चंचल गति चपला नभ चमकत, सिय दिश हेर हँसे रघुराई ॥ बिहस कहो कर गह लख प्यारी, घन बिच दामिन की चपलाई ॥ तुव मुँख चंद्र छटा लख मानहुं.छिन प्रगटत छिन दुरत लजाई ॥ जनक लड़ैती सकुच सुन सिय हँस, पिय उर लाग रहीं हरषाई ॥ २०५॥

पुर्वी ।

श्याम घटा झुकआई अटा सखी, आये न श्याम हमारेरी ॥ गरजत बदरा चमकति चपला, बरसत मेह हमारेरी ॥ रैन अँधियारी सूनी सिजरिया, डरपत जियरा हमारेरी ॥ ना जाने वे कैसे निठुर भए, जीवन प्रान हमारेरी ॥ बेदरदी कौशिल्या के नन्दन, जाने न दर्द हमारेरी ॥ प्रीत लगाय गये मिथिला तज, लई न खबरिया हमारेरी। को अब जाय ल्याये मिलावै वे चितचोर हमारे री ॥ सावन में आवन को प्रीतम करगये कौल हमारेरी। कञ्चन कुँअरि दरश बिन उनके, तरसत नैन हमारेरी ॥ २०६ ॥

कजरी।

बरसत रिमझिम रिमझिम मिहवा, छाये मंदिरवा घनश्याम। नाजाने कित बिलम रहेरी, सखी हमारे श्याम ॥ बरसत०॥ धरत

नहीं जिय धीर वीर लख, उन बिन सूनों धाम ॥ बरसत० ॥ जान अकेली बिरहिन आली, अनी चढ़ाई काम ॥ बरसत० ॥ कञ्चन कुँअरि पपीहा पिउ रट, हिय बेधत निशिजाम ॥ २०७ ॥

कजरी ।

झूला झूलत अवधबिहारी प्यारे रंगमहल में आज ॥
हरि हरि सावन तीज सुहाई, हरे हरे भूषन अंग बनाई, हरे हरे जुगल रूप दरसाई, हरे हरे सब साज ॥ झूला० ॥ हरि हरि दुति दिशि दिपत हिंडोले, हरे हरे नगन जड़े अनमोले, हरे हरे कीर कोकिला बोले, हरि हरि सखन समाज ॥ झूला० ॥ कञ्चनकुँअरि हरे मनभाये, हरे हरे नभ नीरद छाये, हरे हरे बारि बूंद बरसाये, हरे हरे घन गाज ॥ झूला० ॥

कजरी ।

झूलत सघन प्रमोद लतन में, सिया पिया सरजू तीरैंरी ॥
राजत राम रसिक सँग प्यारी, सखियन संग झुलावन हारी । गावत मंजुल राग मलारी, धीरें धीरें री ॥ झूलत ॥ उलहे मेघ गगन घिर आये, मंद फुहार परत मनभाये, चातक पिउ पिउ शब्द सुनाये, सीरें सीरें री ॥ झूलत ॥ चंचल चपला चमक निहारी, कञ्चन कुँअरि कामकिलवारी, डरपि लगत ललना सुकुमारी, पियरें हियरें री ॥ झूलत ॥ २०९ ॥

इति पावस ऋतु बहार झूलन इत्यादि सम्पूर्णम् ।

पद ।

देखौ सखी आवत राजकिशोर ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, जुलफैं ज़ालिम ज़ोर । भाल वि-
शाल तिलक छबि छाजै, द्दग कजरा की कोर॥ सुमन हार मनहार
हिये बिच, हर लीनों मन मोर । पवन ढुरें फहरें छहरें अति, पी-
ताम्बर पटछोर ॥ मृदु बोलन मुसक्यान माधुरी, चितवन में चित
चोर । कञ्चन कुंअरि निरख यह शोभा लाजत काम करोर॥२१०

पद ।

देखौ सखी बिहरत जुगल किशोर ॥
छिटकी शरद रैन उजयारी, छाई छबि चहुं ओर ॥ सिय मुखचंद्र
निमिष तज निरखत, पिय द्दग भये चकोर ॥ अपर अली उड़गन
सम राजहि, सुखमा बड़ी न थोर ॥ सरजू तीर रहस रुचि राचो,
भर हिय प्रेम हिलोर ॥ निरमल सरित सलिलतट परसहि, त्रिवि-
ध समीर झकोर ॥ नाचहि गावहिं भाव बतावहिं, फहरहिं अंचल
छोर ॥ कञ्चन कुंअरि प्रेम मद छाकीं, निरखहि छबि तृनतोर ॥

इति शरदोत्सव पद सम्पूर्णाम ।

अथ पद प्रसंग औढ़छे के श्रीसीतारामजी के स्वप्न दरसन समय के।

भजन।

मिले मोहि सपनिन राजकिशोर॥
काह कहूं वा छिन की शोभा, थकित होत मनमोर॥ रवि शशि मंद होत मुख छबि लख, लाजत काम करोर॥ मृदु मुसक्याय नचाय नैन तकि, तिरछी भोंह मरोर। कञ्चन कुँअरि मधुर कछु कैगये, लै गयेरी चितचोर॥ २१२॥

धुनि थिएटरी।

आली नेहा लगाय प्यारे कितकूं गये।
सपने दरसन दियो बिहारी, मोहनिया हँस हमपर डारी, भूल गई तनमन सुधि सारी, चितवनि में चित लैगये॥ आली०॥ खान पान कछु मोहि न भावै, रहि रहि बिरहा पीर जनावै, बिन देखें पल चैन न आवै, छलबल कर दम दैगये॥ आली॥ कञ्चनकुँअरि कहैं करजोरी, हों चेरी चरनों की तोरी, क्यों बिसराय दई सुधि मोरी, कैसे निठुर हिय होगये॥ आली॥ २१३॥

दादरा तर्ज नई।

अवध नृप लाड़ले॥
॥ दोहा॥ जाछिन सपने में मिले, सियवर राजकिशोर। नैन सैन

घाइल करी, लैगए चितको चोर ॥ मोर तुम श्यामले ॥ अवधनृप ॥ जबसें तुव छबि माधुरी, बसी हिए सुखदैन। रोम रोम तन रम-रह्यो, कियौ दृगन में ऐन ॥ रैन दिन ना टले ॥ अवध ॥ तनमन धन कञ्चन कुँअरि, दीनों तुमपर वार। देहु दरस अब कर कृपा मेरे प्रान अधार ॥ शरण में राखले ॥ अवध ॥ २१४ ॥

भजन।

अतुल छबि मेरेहि काज रही ॥

सजल नील घनश्याम श्याम छबि, मोहिय आज रही। क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, कलँगी छाज रही ॥ खञ्जन नैन सुभग अञ्जन युत, मृग छबि लाज रही। लसत विभूषन अंग अंग प्रति, सुखमा साजरही ॥ पीताम्बर कटि लसन बसन छबि, रुचिर वि-राज रही। कञ्चन कुँअरि बिलोकति यह छबि, ना सुधि आज रही ॥ २१५ ॥

भजन।

सियवर प्यारो दरस मोहि देगयो ॥

सोवत ती मैं फूल बाग में. सखि मो स्वप्न सुंवाँती है गयो। सीस मुकुट पीताम्बर सोहै, झलक दिखाय चोर चित लैगयो ॥ तिरछी तकन तीरसी लागी, मधुरे बैन बिहँस कछु कैगयो। कञ्चनकुँअरि हाय हमरे हिय, पछतैबो अब रै गयो ॥ २१६ ॥

दादरा ।

चोरचित छिपरहे री कित जाके॥
बरबस छीन लियौ मन मेरौ, सपनिन दरस दिखाके। जाग परी मति गति सब थाकी, औचक पड़ गये डांके॥ तिहिपर तान नयन सर मारे, भृकुटि कमान चढ़ाके। कञ्चन कुँअरि निठुरह्वै बैठे, बिरह पीर सरसाके ॥ २१७ ॥

पद ।

आज पिय सपनिन देखे नैन ॥
तबसे विरह बियाकुल आली, उन बिन पल छिन परत न चैन ॥ सीस मुकट श्रवणानी बिच कुण्डल, गर गजरा कजरा दोउ नैन॥ श्याम बरन पट पीत लसत छबि, निरखत लाजत कोटिन मैन। मंद चाल गजगति गरबीली, नूपुर धुन सुन भइ बेचैन॥ भौंह कमान तान तक मारी, अनयारी तिरछी दृग सैन। तमचुर बोल श्रवण सुन चौंकी, खुलगये नैन भयौ दुख ऐन ॥ कञ्चनकुँअरि सोच रहि मनमें, सुनी न कहीं बतियां सुख दैन ॥ २१८ ॥

धुन प्रभाती ।

क्रीट मुकुट झलकाय अचानक जानै कहां से आये ॥
सोवत ती मैं सुखद नींद में, रंगमहल सुखपाये। राजकुँअरि चितचोर छबीले, सपनिन दरस दिखाये ॥ घुंघरारी अलकें मुख छलकें, केशर तिलक सुहायें। गोल कपोलन कुण्डल हलकें, दृग

कजरा छबि छाये। मुक्तामाल हिये पर राजत, सुमन हार मनभाये॥ कर कञ्जन धनु शायक फेरत, मंद मंद मुसक्याये। कञ्चन कुँअरि कतल करदीनी, तक दृग बान चलाये॥ २१९॥

धुन लावनी।

जबसे मिले सखी सपने में तबसे वही दिखाते हैं। प्यारे राजकुँअर मुसक्याके मेरा चित्त चुराते हैं॥ कर करके मीठी बतियों में मनको नित्त लुभाते हैं॥ तिरछौंही चितबनके तीखे तक तक तीर चलाते हैं। कञ्चन कुँअरि भए जे घाइल बरबस तिन्हें रुलाते हैं॥ २२०॥

मञ्जु।

रघुबर राजकिशोर दरस बिन क्यों अब मोहि तरसाते हो॥ ऐ चित चोर किशोर कौशला नाहक नाम धराते हो। स्वप्न दिखाय मोहनी मूरति अब काहे शरमाते हो॥ कञ्चन कुँअरि चरन की चेरी सो क्यों सुरति भुलाते हो॥ २२१॥

भजन।

सपनिन में सुरतिया दिखाय गयौरी॥ मैं सोवत ती अपने महल में, नाहक बिरह जगाय गयौरी। चौंक उठी मैं कतहुं कोउ नाहीं, नैनन नीर बहाय गयौरी॥ कञ्चनकुंअरि दरस बिन ब्याकुल, तनमन विवस हराय गयौरी॥२२२॥

भजन ।

लियौ मन राजिव लोचन राम ॥

जबसे दृष्टि परे रघुनन्दन, भूल गये गृह काम। मधुर हँसन बोलनि बलिहारी, नहि बिसरति बसु जाम ॥ श्यामलो सूरति मोहनी मूरति, बसी दृगन अभिराम। कञ्चन कुँअरि कटीलो चितवनि, कियो हियो कतलाम ॥ २२३ ॥

रेखता।

कैसी लगन लगाई, रघुबंस छैल प्यारे। नाहक मुझे सताई सपनिन दरस दिखारे॥ सुन्दर छबी सुहाई, आकर मुझे दिखाई, चित लैगये चुराई, चितचोर हौ हमारे॥ कैसी० ॥ तबसे न चैन आवै, नहिं खान पान भावै, कछु मोहि ना सुहावै, गृह काम धाम सारे॥ कैसी॥ कञ्चन कुँअरि को आवो, मूरति मधुर दिखावो, हिय की तपन बुझावो, शरनों में हूं तुम्हारे॥ कैसी॥ २२४॥

ग़ज़ल।

श्यामला रघुराज प्यारा दिल हमारा लैगया। दृग सैन तीखी मैनसर सम मार घाइल करगया॥ हों जो अपनी मौज में, सोती थी सुखमय सेजपर। आ अचानक स्वप्न में, दरसन छबीला दैगया॥ जाग आतुर जो उठी, पकडूं चतुर चित चोरको। तब तलक वो लाल छलिया, ओट पलकों के भया॥ लग रही कञ्चन

कुंअरि, तबसे मिलनकी चटपटी। फेर कब होंगे दरस, सपने में सपना होगया ॥ २२५ ॥

गज़ल।

ऐ शिकारी श्यामले महबूब रघुनन्दन छली। मारकर सोवत में हमको, क्या नफा तुमको मिली ॥ ऐ० ॥ दै दरश सपने में अपने छिप रहे नृप लाडले। हो बड़े बेदर्द फिर निकले नहीं मेरी गली ॥ दिनपै दिन दरशन की आशा, लगरही दिल में मेरे। बिन दरश पाये दिवस निशि, बढ़रही दिल बेकली ॥ दो दरश कञ्चन कुंअरि, अबतो कृपाकरके मुझे। हों चरन चेरी तुम्हारी, अब नज़र कीजे भली ॥ २२६ ॥

भैरवी।

कैसी करौं गुइयां करिजवा में पीररी ॥
रह रह जखम जिगर में हूलै, कसकत हिय दृग तीररी। पल नहिं परत पलक बिन देखे, सुन्दर श्याम शरीररी ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया, नैनन बरसत नीररी। कञ्चनकुंअरि दरद नहि जानै बेदरदी रघुबीररी ॥ २२७ ॥

गज़ल।

फिरकै दरस दिखादो रघुराज प्रान प्यारे ॥
मूरति मधुर तुम्हारी, सपने में जो निहारी, बिसरत नहीं बिसारी

तन प्रान जीवन वारे। कुञ्जनमें ढूंढ हारी, मोहि बिरह पीर भारी, सुनिये अवधबिहारी, मेरे दृगन के तारे॥ कौशल सुताके वारे, अवधेश के दुलारे, कञ्चन कुँअरि तुम्हारे, आई शरण सकारे२२८

गज़ल।

छैल रघुनन्दन छबीला दिल चुराकर लैगया॥
छन्दकर नृपनन्द आली, दम में दम मोहि दैगया। सिर मुकुट कटि पीतपट, शुभ कञ्जकर धनुसर लसैं, नैन खञ्जन की तिरीछी सैन हिय बिच दैगया॥ फेरदृग हँस हेर मोदिशि, मन कछुक लल-चायके, मञ्जु मीठे मृदु सुधासम बोल अटपट कैगया। स्वप्न में झांकी मनोहर, मोहिनी कञ्चन कुँअरि, देखि सब सुधि बुधि भुलानी, बिबस तनमन होगया।। २२९॥

रेखता।

झांकी अनूप औड़छैं श्रीरामचन्द्रकी, सुन्दर छटा निहारी अवधेश नन्द की। सिय अनुज सहित शोभा बर्णन मैं क्या करूं लख कोटि काम लाजै दुति मन्द चन्दकी॥ जब से लखी अनो-खी छबि रूप माधुरी, छाई मेरे दृगन में आनन्द कन्दकी। कञ्चन कुँअरि हमारे हिय में खटक रही, वह नैन सैन बांकी मुसक्यान मन्द की॥ २३०॥

पद।

कृपा मोपै कब करिहौ (श्री) राम राजा॥
दोउकर जोरे बिनय करत हौं, सुनियौ अरज महराजा॥ नगर

अयोध्या धाम ओड़छा प्रगट भये रघुराजा ॥ रतन सिंहासन आय बिराजे सियजू सहित समाजा। कञ्चन कुँअरि कृपा वर मांगत चरन कमल सेविका जा ॥ २३१ ॥

गजल।

श्रीरामचन्द्र स्वामी सुनिये बिनय हमारी। तनमन से नाथ चेरी चरनों की मैं तुम्हारी ॥ सुखरास बास दीजे मोहि खास ओड़छे में। कीजे कृपाल पूरन हिय लालसा है भारी ॥ चाहूं न और मैं कुछ प्रानों के प्रानप्यारे। दोनों द्रुगनके तारे होजा पिया प्यारे॥ जोड़ी मधुर मनोहर परिकर समेत पेखों। सौभाग अपनो लेखों सुन्दर छबी निहारी ॥ जलबेतवा सरितकौ पावन परम मनोरम। अति हर्ष पर्स करके त्रयताप तन निवारी॥ कञ्चनकुँअरि नहाकर मनकाभना पुजाकर। नित रंगमहल आकर सेवा करूं तिहारी॥ २३२ ॥

इति श्रीओड़छा के स्वप्नदरसन के पद प्रसंग सम्पूर्ण।

अथ कांचन स्फुट पद बिनोद

ग़ज़ल प्रभात समयके उत्थापन के।

अब हमारे प्रान प्रीतम जानकी जीवन जगे। कौशलेश कि-शोर प्यारे भक्त मनरञ्जन जगे ॥ चांदनी जाती रही शशि की प्रभा फीकी पड़ी। वालरबि पूरब उआ लख कंज बिकसानें लगे ॥ वेद

धुनि मुनि उच्चरे वंदी सुजस बरनन करैं। दरश कारन संतजन दरबार में आने लगे ॥ दास खास खवास सेवा साज निज निज साजके। भरत रिपुसूदन लखन हाज़िर सकल होने लगे ॥ नाथ अब अस्नानकुंज पधारिये करके कृपा। अंजनीनन्दन समय लख अर्ज करवाने लगे ॥ त्यार रक्खो पान मेवा प्रात भोजन के लिये। भरतजी कञ्चन कुँअरि से हुक्म फरमाने लगे ॥ २३३ ॥

ग़ज़ल व्या॰रू॰ पीछे नयन समयकी।

अब हमारे प्रान जीवन जुगल अलसाने लगे। छिनही छिन अँगड़ाइयाँ लेलेके जिमहानें लगे ॥ चंचलाहट हट गई उत्पन्न भोलापन हुआ। नीद बस माते नयन नवकंज सकुचाने लगे ॥ रैन हू बीती बहुत नभ मध्य उड़गण आगये। गीत राग बिहाग भी गायक गुनी गाने लगे ॥ दूसरी नौबत बजी घड़ियाल भी दीनी गज़ल। पहरुवा आकें अपर पहरा को बदलाने लगे ॥ ले चलो कञ्चन कुँअरि प्यारे को अब सुखसेज पर। सैन दरशन को हमारे नैन ललचाने लगे ॥ २३४ ॥

ठुमरी।

सिजिया रतिया कसकें छतियां, मनमोहनकी सखि वे बतियां। इक रोज मिले सँग वंधु सखा धनुतीर लिये करमें रसिया ॥ मैं सखिन सहित मग जात चली निज शीस लसै जल गागरिया। हौं निज हार सुधारत बेंदियाँ, उन निरख समारी पागरिया ॥ हँस

नैनन सैनन बैन कहे नहि भेद लहे सँग की सखियो। जिय धीर धरै नहि कञ्चनको बिछुरे जबसे सखि सियाके पिया ॥ २३५ ॥

भजन।

आज लखे सखि राजकुमार ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल गले सोहै मोतिन कौ हार। श्यामल बदन रसिक मनमोहने पीत बसन तन धार ॥ मंद मंद मुसक्यान माधुरी चितवनि में बलिहार। जनक लड़ैती यह छबि निरखत तनमन धन दीनों सब वार ॥ २३६ ॥

भजन।

ये दोउ मेरे जीवन प्रान ॥
श्रीविदेह नृपराज नंदिनी, रघुनंदन-सुखदान। सुखमा शील रूप गुनआगर रसनागर छबि खान ॥ शिवरी गीध सुसेवक जिनके भालु कीश महमान। कञ्चन कुंअरि सरन तक आई अधम उधारन बान ॥ २३७ ॥

ग़ज़ल।

अनोखा लाड़िला प्यारा, नवल प्रीतम हमारा है। छबीला छैल रघुनन्दन, मुझे प्रानों से प्यारा है ॥ सुभग शृंगार तन सोहै, निरख छबि शंभु रिपु मोहै,। ये उपमा जोग्य जगको है, मेरा मन खोज हारा है ॥ छटा छबि श्यामले तनकी, मधुर मुसक्यान मोहन

की, हरन मन सैंन नैननकी, विवसकर प्रान डारा है ॥ कहैं कञ्चन कुँअरि लालन, कहां सीखे हौ ये ख्यालन। फसाया प्रेमके जालन चुराया दिल हमारा है ॥ २३८ ॥

पद।

देखौरी नृप सुवन छबीले ॥
बंधु सखन सँग सरजू तट पैं बिहरत छैल रूप गरवीले। नीर भरन कोउ जान न पावत, छेड़त मग रघुराज हटीले ॥ कञ्चन कुंअरि काल मोहि छेड़ो, नव जोबन रिझुवार रसीले ॥ २३९ ॥

पद।

मन मानिक मेरौ गेर गयौरी ॥
सरजू तीर गई मैं सजनी, औचक आ मुठभेर भयौरी। अनुपम छबि दरसाय छकाई, छैल फैलकर घेर लयौरी ॥ हँस हेरन सायक कर फेरन नैनन सैन तरेर ठयौरी। कञ्चन कुँअरि वधिक मृगनी जिमि, राज सुवन मोहि हेर हयौरी ॥ २४० ॥

भजन।

हँस हँस के मेरौ हियरौ हरोरी ॥
केलि कुंज में मिले अचानक, नाजानै काह करोरी। जानपरत जादू सौ मानौ दृग कजरेकी कोर मरोरी ॥ दिन नहि चैन रैन नहिं निंदिया मारत मैन मरोर परोरी। कञ्चन कुँअरि प्रान जीवनधन कब मिलि हैं कोउ सुदिन धरोरी ॥ २४१ ॥

रेखता ।

इकरार यार तुमने कैसा भुला दिया है। बहियां पकड़ के मुझको मझधार तज दिया है॥ मिथिला नगर में तुमने कीना था कौल कैसा। ना प्रेम पल बिसारौं बाना यही लिया है॥ अब जो न नाथ अपनी बिरदावली सम्हारौ। दासिन की आस छूटै कैसे रहै जिया है॥ कञ्चन कुँअरि तुम्हारी जो हों भली बुरी में। पत नाथ हाथ मेरी निश्चय यही किया है॥ २४२॥

पद ।

किशोरीजी राखौ लाज हमारी॥
तुम स्वामिनि मैं चरन किंकरी पदरज सेवन हारी। जो करनी जिय आनहु मोरी तो नाहिन निस्तारी॥ सहज अपावन अबल अकेली है इक आस तिहारी। माया मोह अथाह सिंधुमें बही जात मझधारी॥ कञ्चनकुँअरि सरन तक आई करगहि लेहु उबारी॥२४३

ठेठर ।

झूंठा सब संसार इक है राम नाम सार॥
बालापन खेलतही बीतो, धूर लपेटी अंग। दूध पियो माताकी गोदी, सोई पांव पसार॥इकहै०॥ तरुन भई मद छकी मदनके, भये मात पितु दूर। रैन दिवस प्रीतम मुख जोहै प्रान करै बलिहार॥ इकहै०॥ जबलौ चाम चमक पिय पाई तब लौं कीनों प्यार। चमक घटे भर नैन न हेरे दीनों प्यार बिसार॥ इकहै०॥ सुतपति के

नेह सब झूंठा, नाहिन अपनों कोय। भाई बन्धु सबै स्वारथ के, हैं पैसा के यार ॥इकहै० ॥ अटकी कठिन भँवर बिच नैया, पार-लगावनहार। कञ्चन कुँअरि हितू एक सांचे (श्री) दशरथ राज-कुमार ॥ इकहै० ॥ २४४ ॥

पद।

आजें आज सरजू तीर ॥

चौकी चारु मनिन मय राजै, तापर सिया रघुबीर ॥ जनकलली दामिन दुति सुन्दर पिय घनश्याम शरीर॥ पीताम्बर पट उत छबि छाजत इत नीलाम्बर चीर॥ सिय सिर शुभग चंद्रिका झलकत उत कलँगी मंदीर ॥ बसन विभूषन लसत जुगल तन छबि बरनें को बीर ॥ पिय कर बाम सिया गल सोहै दाहिन कर धनु तीर ॥ मृदु मुसक्यात बतात परस्पर हरत हृदयकी पीर ॥ कञ्चन कुँअरि नि-रख यह शोभा रहो न तनमन धीर ॥ २४५ ॥

पद।

आज दोउ राजत जुगल किशोर ॥

सरजू तट बिहरत मनभावन छहरत छबि चहुं ओर। हों जो गई ही सुमन लैन सखि बन प्रमोदकी खोर ॥ औचक दृष्टि परे तहँ तिहि छिन मेरे चितके चोर। सुमन न मिले सुमन मैं खोयो थकित भई गति मोर ॥ श्याम गोर शोभा बिलोक सखि झपट गए दृग दौर। कञ्चन कुंअरि फिरत नहिं फेरे उरझ रहे तिहि ओर॥२४६॥

पद।

छेड़ौ ना रघुराज डगरिया॥
नृप अवधेश सुवन रघुनन्दन, तुमहिं न सोहति छैल झगरिया। हम कुल वधू न रोकौ मग में, देख हँसै सब अवध नगरिया॥ लपटा झपटी करत लाड़िले फट जैहै झटको ना चुनरिया। कञ्चनकुँअरि हटौजी लालन, भरन जानदो नीर गगरिया॥ २४७॥

पद।

लगो तुमसे नेहरा सियावर प्यारे॥
जबसे लखी श्यामरी सूरति, नैनन बसी है हमारे। क्रीट मुकुट माथे पर सोहै, कोटि मदन छबि वारे॥ मंद मंद मुसक्यात जात हैं चाल चलात मतुवारे। जानक लड़ैती निरखि छबि मोही चितसे टरत न टारे॥ २४८॥

दादरा।

दृगन मन बस गयेरी मोरी गुइयां॥
कै मोरी गुइयां अवधनगर की खोरन अचानक मिल गयेरी।
कैमोरी गुइयां तक तक तिरछी सैनन बिहँस कछु कै गयेरी॥
कैमोरी गुइयां अनुज सखन लिये संग दरश मोहि दै गयेरी।
कैमोरी गुइयां अनुपम छबि दरसाकर चोर चित लै गयेरी॥
कैमोरी गुइयां कञ्चन प्रानप्यारे गैल इत कढ़ गयेरी॥ २४९॥

रेखता।

श्यामल सुभग सलोने अवधेश के दुलारे। सियजीके प्रान

प्यारे तिहुं लोक के उजारे ॥ निरखी छटा बिपिन में, औचक सुघन लतन में। बिहरत प्रमोद बनमें मेरे द्रुगनके तारे॥ जुलफैं अमोल प्यारी, छलकें सुघूंघरवारीं। अहिछोनियां सी कारी, लखि प्रान तन बिसारे॥ सिर क्रीट मुकुट झलकै, कलँगी बिशाल हलकै, कुण्डल कपोल दमकै, केशर तिलक सम्हारे॥ अंजन द्रुगन में राजै, अधरन तमोल छाजै। हिय मणिन माल भ्राजै, करकंज धनुष धारे॥ पट पीत अंग श्यामा, जरकस किनार जामा। नूपुर ललित ललामा मनमोहनें हमारे॥ तिरछी तकनि कटीली, बोलन मधुर रसीली॥ बांकी छटा छबीली, लखि प्रान वारि डारे॥ कञ्चन कुँअरि छकी सी, गतिमति रही थकीसी। हेरत जकी चकीसी, जब से उन्हें निहारे॥ २५०॥

माड़।

दीजे दयानिधान दरश दीन जानके॥

॥ दोहा॥ हों चरनन सरनें पड़ी अबतो तुम्हारे आन। करहु कृपा करुणा यतन रघुनन्दन सुखदान॥ दरश०॥ अटकी नाव कुठौरमें भँवर परत गंभीर। कौन लगावै पार प्रभु तुम बिन श्री रघुबीर॥ दरश०॥ मात पिता परिवार युत सबसें भई निरास। कंचन कुँअरि कृपाल तब आई तुम्हरे पास॥ दरश०॥ २५१॥

ठुमरी।

आज श्याम मोसें करत ठिठोलीरे॥

करत ठिठोली मोसे अति बरजोरी रे। आज श्याम मोसें करत०॥

गैल चलत मेरो मारग रोकत, बहियां पकर झकझोरी रे ॥ आज० ॥ हाहा करत तोरी पैंयां परत हों बिनय करत करजोरी रे ॥ आज० ॥ कञ्चन कुँवरि न मानत बरजी, हँसि कीन्हों चितचोरी रे ॥ आज श्याम मोसे० ॥ २५२ ॥

दादरा ।

अवध छैल मोरी बहियां मरोरी । बैंया मरोरी करी बारा-जोरी ॥ मैं सरजूजल भरन जात तो मिलगयो श्याम सांकरी खोरी । हँस हँस के रसबस मोहिं कीनों गहि अंचल मोतिन लर तोरी ॥ कञ्चन कुँवरि न मानत हटकी हाहाकर हारी कर जोरी ॥२५३॥

भजन ।

अरे मन चेतत काहे नाहीं ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह में खोवत जन्म वृथाहीं । झूंठो यह संसार स्वप्न सम उरझि रहो तामाहीं ॥ रे मूरख सिय राम भजन बिन शुभ दिन बीते जाहीं । राम नाम रस सुधा न पीवत बिष रस चाखन चाहीं ॥ अजहूं चेत कहो कर मेरो फिर पीछे पछताहो । कञ्चन कुँवरि थकित भइ रसना, बकत२ तो पाही ॥ २५४ ॥

भजन ।

हटको मन मधुकर है ॥
फिर फिर छबि मकरंद माधुरी दृगपुट चखन चहै । फसो जाय दृढ़ फंद प्रेमके दुसह कलेश सहै ॥ कञ्चन कुँवरि बिषय रस लंपट तदपि न सोच लहै ॥ २५५ ॥

भजन ।

अरे मन क्यों भूलो जगजाल ॥
चेत चेत दृग खोल बावरे सिरपर छायौ काल ॥ हित परिवार सभी स्वारथ के लख नीके कर ख्याल ॥ समय पड़े कोई काम न आवै बिन दशरथ के लाल ॥ कञ्चन कुंवरि सँभार न तोकूं कहा निहारौ हाल ॥ २५६ ॥

भजन ।

अरे मन मूरख बन क्यों पड़ो है ॥
जीव मृगा संसारी बन में भूलो क्यों जो डरो है ॥ जैसे निकसै बनज ब्योपारी रस्ता भूलि फिरो है ॥ मोह जाल में आन फसो है दुख सुखमान रहो है । कञ्चन कुँवरि निरखि निज मारग जग सुख कौने लहो है ॥ २५७ ॥

पद ।

शरण मोहि राखलो सिया सुकुमारी ॥
हौं अति दीन अधीन हीन मति स्वामिनि दासि तुम्हारी ॥ हेरहु कृपा कटाक्ष नैन भर हे निमिराज दुलारी ॥ दीजे विमल भक्ति निजपद रति सुनिये अरज हमारी ॥ कञ्चन कुँवरि निहोर जोर कर मांगत बर बलिहारी ॥ २५८ ॥

देश ।

आज सखी मोसे कीनी बाराजोरी ॥
हाहा करी मैंने बिन्ती करत रही नहि मानी बरजी चितचोरी ।

अनुपम छटा दरशाय छबीले हँस डारी गलबइयां मोरी। कञ्चन कुँवरि अकेली पाय कर कुञ्जन बोच मोहि आन ठगोरी॥ २५९॥

भजन।

जे अखियां ऐसी उरझानी॥
अवध छैल दिलदार यार की, छबि लख हुई दिवानी। अलि ज्यों जाय फँसै मधु लोभें, ए सौन्दर्य लुभानी॥ लोक लाज कुल कानि त्याग सब, बिनहीं मोल बिकानी। कञ्चन कुँवरि कठिन प्रण ठानै, हटकी नेक न मानी॥ २६०॥

इति श्रीकाञ्चनकुसुमाञ्जलि।

पञ्चवटी का दृश्य ।

गोदावरि सरित तीर सोहें मुनि सिद्धभीर गहवर बन शुचि-समीर दृष्य जोहनी । विकसित नवकञ्ज मञ्ज गुञ्जत अलि पुञ्जलुञ्ज बहत वारि दुहुं कनारि लाता लोहनी ॥ पञ्चवटी तरु तमाल विरचित तँह लखनलाल पर्णशाल अति बिचित्र रति बिमोहनी । हरित बेणु खम्भ धसित बेत्र वंध संधि लसित तृण उसीर बल्लरीन छई छोहनी ॥ रम्भा फल भार झुकी मानो दिविदार रुकीं शुकपिक रव कोक कुकीं करैं सोहनी । चौके रुचि चारु खचे धातु राग धूरि रचे अमिय मूरि कौशलेश प्रिय पतोहनी ॥ मध्य बेदिका बिलोकि हरत त्रिविध ताप शोक सुमन तुलशि वृन्द रोक काम दोहनी । बेदध्वनि ऋषी मुनी करैं सिद्ध साधु गुनी राघवेन्द्र जनरूजा भुवि भार थोहनी ॥ रितुपति रति अतन तहां कानन कलकुंज जहां लोल है अडोल रहत गिरि सो गोहनी । अजहूं "सौन्दर्य" रहत सरिता शुचि सलिल बहत संतत संताप दहति काम कोहनी ॥

सख्य समाज प्रति प्रेम सन्देश ।

सवैया— रघुराज के प्यारे दुलारे सखा तुम जेतिक हो सो भले रहिहौ ।
मिथिलेश लली की अली के तहूं पदपंकज की रज कों चहिहौ ॥
चतुराई चिरौरी करौ करौ रस माधुरीस्वाद तबै पहिहौ ।
'सौन्दर्य लता' सब स्वांग भुलै भर मांग सुहाग जबै लहिहौ ॥

दोहा— मृदुल मोदमुद माधुरी, करुणा सिंधु गँभीर ।
स्वामिनि जय श्रीमैथिली, आर्यः श्रीरघुबीर ॥
कोपित कलि लोपित सकल, मुद मङ्गल मयसाज ।
शरण मैथिली के रहत, हम अबलन की लाज ॥

श्रीमैथिलीशरण "सौन्दर्य".

। शुभम् ।

16726

[illegible]